Final



ੴ सतिगुर प्रसादि ॥



गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)
आश्विन-कार्तिक, संवत नानकशाही ५३९
अक्तूबर 2007

संपादक
सिमरजीत सिंघ
एम. ए, एम. एस. सी.

सहायक संपादक
सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए (हिंदी, पंजाबी) बीएड.

चंदा

प्रति कापी	३ रुपये
सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये

कार्यालय का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59
एक्सटेंशन नंबर { वितरण विभाग 303
संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919

e-mail : info@sgpc.net
website :www.sgpc.net

विषय सूची

Final

गुरबाणी विचार :

सो किउ मंदा आखीऐ . . .

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु चलै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
जितु मुखि सदा सलाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥

आसा की वार में अंकित इस श्लोक में श्री गुरू नानक देव जी महाराज तत्कालीन स्त्री-निंदा के रुझान को ज़ोरदार रूप में नकारते हुए स्त्री आधारित मानवीय सामाजिक व्यवस्था के तथ्य को हमारे दृष्टिगोचर करते हुए उस प्रभु के बनाये स्त्री-पुरुष संयोग के विधान को पूर्णत: स्वीकार करने हेतु पुरुष-समाज को सामाजिक और आध्यात्मिक दिशा बख़्शिश करते हैं।

गुरू जी फरमान करते हैं कि 'भंड' से अथवा 'स्त्री' से जीव अथवा मनुष्य जन्म लेता है। जन्म लेने से पहले बच्चे का शरीर स्त्री की ही कोख में बनता है। स्त्री से ही सगाई और फिर विवाह होता है। स्त्री से और कईयों के साथ नाता जुड़ता है। स्त्री से ही रास्ता चलता है अर्थात जगत-उत्पति का सिलसिला चलता है। स्त्री अथवा पत्नी की मृत्यु हो जाने पर पुरुष अन्य स्त्री की भाल में हो जाता है। सभी रिश्ते-नाते का संबंध भी तो स्त्री से ही बनता है। अत: स्त्री पारिवारिक जीवन का मूल आधार है चूंकि उसके बिना पारिवारिक--सामाजिक व्यवस्था आगे नहीं चल सकती। तो फिर स्त्री को बुरी क्यों कहें? स्त्री से राजन तक भी जन्म लेते हैं भाव मानव समाज मे सर्वशक्तिशाली माने जाते राजा भी मूलत: स्त्री की कोख से ही जन्म लेते हैं। कहने से भाव हरेक मनुष्य स्त्री (मां) का ही पुत्र होता है।

गुरू जी आगे फरमान करते हैं कि स्त्री भी स्त्री से ही जन्म लेती है। स्त्री के बिना कोई नहीं हो सकता- न ही पुरुष न ही स्त्री। यदि स्त्री से कोई जन्म नहीं लेता तो वह है सच्चा मालिक प्रभु। मनुष्य मात्र चाहे वह पुरुष रूप में है, चाहे स्त्री रूप में, जो भी अपने मुंह से उस सच्चे मालिक प्रभु की सच्ची स्तुति करता है उसके माथे के भाग्य उज्जवल हैं। हे नानक! वही मुख जो प्रभु की स्तुति करते हैं वही प्रभु-दरबार में उज्जवल हैं। ■

संपादकीय:

सिख शूरवीरता का प्रमाण साका पंजाब साहिब

बीसवीं सदी में जब पुराने युग के सिखों द्वारा घटित की गई आश्चर्यचकित घटनाओं को तनिक सी आशंका के भाव से देखा-समझा जाने लगा तो गुरू नानक नाम लेवा सिखों ने गुरुद्वारों के सुधार का अभियान चलाकर और देश के अंतिम शासक अंग्रेजों से स्वतंत्रता के लिए चल रहे कौमी संघर्ष में देश में अपनी गणना की प्रतिशतता से अधिक कुर्बानियां देकर प्राचीन सिख इतिहास की वास्तविकता को सिद्ध किया। साका श्री पंजा साहिब इस अभियान और संघर्ष का एक अटूट हिस्सा है जिसको स्मर्ण रखना अति अनिवार्य है।

शूरवीरता के बारे में ऐमर्सन का कथन है : **Heroism feels and never reasons and therefore is always right.**

अर्थात शूरवीरता अनुभव करती है, यह तर्कों/दलीलों में नहीं पड़ती अत: यह सदैव सही एवं सच्चाई पर है।

यह उपरोक्त कथन गुरू के सिखों के जीवन-ढंग एवं कर्म-व्यवहार पर शत-प्रतिशत लागू होता है और श्री पंजा साहिब के सिख शूरवीर शहीदों तथा शहीदी-गाने सिरों पर बांधने वालों ने इसको प्रमाणित किया है।

संवत् १९७९ में गुरू के बाग का मोर्चा लगा हुआ था। गुरू का बाग तहसील अजनाला में श्री अमृतसर से लगभग १४ मील की दूरी पर स्थित पावन स्थान है यहां हिंद की चादर नवम सिख गुरू श्री गुरू तेग बहादर जी की पावन स्मृति में गुरुद्वारा साहिब है। सिख राज्य काल में सिख सरदारों और उपक्षेत्र की सिख संगत ने इस गुरुद्वारा साहिब की सेवा-संभाल एक महंत को सौंपी। यह महंत उदासी संप्रदाय से संबंधित था। यह ज्ञात हो कि सिख राज्य-काल से पूर्व-काल में बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके साथी सिंघों की सामूहिक शहीदियों के पश्चात हकूमत ने जब सिख जनसाधारण को भी हकूमती अत्याचार व दमन का निशाना बनाना आरंभ कर दिया तो ऐसे समय में उदासियों ने गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल में सकारात्मक तथा भरपूर हिस्सा डाला था।

सरकार गुरू के बाग़ के मोर्चे में पकड़े सिखों को दूर स्थित अटक जेल में भेज रही थी। हसन अबदाल श्री पंजा साहिब में सिख संगतों को पता चला कि ३० अक्तूबर १९२२ को प्रात: दस बजे भूखे-प्यासे सिखों से भरी एक गाड़ी श्री अमृतसर से अटक को जाने के लिए श्री पंजा साहिब के रेलवे स्टेशन से गुज़रने वाली थी। स्वाभाविक ही सिख संगतों में भूखे-प्यासे सिखों की भूख और प्यास तृप्त करने की इच्छा उत्पन्न हुई। संगतों की भावना

थी कि जिस पावन एतिहासिक स्थान पर सिख धर्म के संस्थापक गुरू नानक पातशाह ने वली कंधारी का अहंकार तोड़ अपने प्रिय सिख भाई मरदाना जी को शीतल जल का चश्मा प्रकट कर जल छका कर तृप्त किया था उस पावन स्थान से यदि भूखे प्यासे बिना भूख-प्यास मिटाये जाने दिये जाएं तो यह बात उपयुक्त न होगी, यह सिखी सिंद्धांतों के अनरूप न होगी। इसलिए संगतों ने भाई प्रताप सिंघ की अगुआई में गाड़ी रेलवे स्टेशन पर रुकवाने हेतु स्टेशन मास्टर से संपर्क करके प्रयास किये परंतु तत्कालीन हकूमत का कारिंदा स्टेशन मास्टर गाड़ी रुकवाने के लिए न माना। तब सिख संगत ने मता पास किया कि जैसे भी हो वे गाड़ी को रोकेंगे और भूखे-प्यासों को प्रशादा एवं जल छकाकर ही रहेंगे। इस उद्देश्य की पूर्ती हेतु संगतों ने लंगर एवं जल का भण्डार वहां एकत्र किया।

सिख संगतें रेल लाई पर लेट गईं। गाड़ी के चालक ने कुछ दूरी से सिख संगतों को लाईन पर लेटी हुईं देख लिया परंतु उसने गाड़ी न रोकी। ज्ञानी नाहर सिंघ संपादक 'गुर सेवक' पत्रिका, श्री अमृतसर के शब्दों में- जिस समय गाड़ी स्टेशन के उत्तर दिशा वाले सिगनल के पास पहुंची, तब लाईन पर बैठे सिंघों के ऊपर से इंजन उनको शहीद करता हुआ आगे बढ़ना चाहता था, परंतु सिंघों के शांतिपूर्ण रक्त की ब्रेक ने इंजन को खड़ा कर लिया। स. प्रताप सिंघ जी और स. कर्म सिंघ जी शहीद हो गए और ४ सिख घायल हुए।'

स. प्रताप सिंघ जी गांव अकालगढ़ जिला गुजरांवाला के रहने वाले थे और गुरुद्वारा पंजा साहिब में खज़ानची थे। भाई कर्म सिंघ श्री आनंदपुर साहिब के निवासी थे तथा उन दिनों गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब की यात्रा पर थे और इनकी सिंघनी भी इस तीर्थ-यात्रा में उनकी सहभागिन थी। घायलों में भाई निहाल सिंघ गांव लालपुरा ढोटियां जिला अमृतसर, भाई भाग सिंघ हलवाई गु: श्री पंजा साहिब निवासी गांव पड़ियाल ज़िला कैमलपुर, भाई फकीर सिंघ निवासी श्री पंजा साहिब और भाई कल्याण सिंघ गांव मतिहारी ज़िला मुजफ्फराबाद (काश्मीर) के नाम मिलते हैं। जब अंतिम श्वास ले रहे भाई प्रताप सिंघ जी, भाई कर्म सिंघ जी और उपरोक्त घायल सिंघों के बचाव एवं सेवा-संभाल करने के कार्य को किया जा रहा था तो ऐसा कहते सुने गए कि हमारी परवाह न करो, पहले गाड़ी वाले सिंघों को प्रशादा छकाओ।

इस साके के घटने से श्री पंजा साहिब की गुरू-कृपा की पात्र बनी धरत सुहावी पर सिख शहीदों के रक्त का रंग चढ़ा। ऐसे शहीदों व शूरवीरों पर हम जितना गर्व करें थोड़ा है। श्री पंजा साहिब की सिख संगत ने जैसे भूखे प्यासे सिंघों को परशादा व जल छकाने का अपना संकल्प पूरा किया उसका यह साहस भरा महान कार्य हरेक युग में हमारे लिए अपने धर्मी संघषरत् बंधुओं के लिए सहानुभूति और प्रयासरत् स्रोत बना रहेगा।

■

Final

गुर रामदास राखहु सरणाई

-भाई सतनाम सिंघ*

श्री गुरू रामदास जी दया व प्रेम की मूर्ति, नम्रता के पुंज, संगीत-कला व विद्या के प्रेमी के रूप में जाने जाते हैं। आप जी का समूचा जीवन गुरमति विचारधारा एवं सिख जीवन-शैली की अद्वितीय मिसाल है। भट्ट विद्वानों ने अपनी बाणी, जिसे 'भट्टां दे सवैये' के नाम से जाना जाता है, में गुरू साहिब की स्तुति इस प्रकार की है:

गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥
तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥
लहणै पंथु धरम का कीआ ॥
अमरदास भले कउ दीआ ॥
तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥
हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ (पन्ना १४०१)

अर्थात् श्री गुरू नानक देव जी प्रभु के निकट रहते हैं। उन्होंने भाई लहणा जी (श्री गुरू अंगद देव जी) को गुरू स्थापित करके उनमें ईश्वरीय ज्योति का प्रकाश कर दिया। भाई लहणा जी ने धर्म का मार्ग चलाया और फिर उसे श्री गुरू अमरदास जी के सपुर्द कर दिया। श्री गुरू अमरदास जी ने श्री गुरू रामदास जी को गुरगद्दी व कभी न खत्म होने वाला हरि-नाम का खजाना बख़्श दिया:

गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥
इहु राज जोग गुर रामदास तुम्ह हू रसु जाणे ॥
(पन्ना १३९८)

अर्थात् श्री गुरू नानक देव जी, श्री गुरू अंगद देव जी और श्री गुरू अमरदास जी जैसे प्रभु-भक्त प्रभु में विलीन हो गए हैं। हे गुरू रामदास जी! अब आप राज व योग का आनंद ले रहे हो।

ऐसे राजयोगी चौथे पातशाह श्री गुरू रामदास जी का प्रकाश, भाई हरिदास जी के गृह माता दया कौर जी की कोख से २५ आश्विन, सं. १५९१ (२४ सितंबर, १५३४ ई.) को चूना मंडी लाहौर (अब पाकिस्तान) में हुआ। गुरू जी के बचपन का नाम 'जेठा जी' था। छोटी आयु में ही भाई जेठा जी के माता जी का स्वर्गवास हो गया, फिर सात वर्ष की अल्प आयु में पिता का साया भी सिर से जाता रहा। आपके नानी जी आपको आपके छोटे भाई और बहन के साथ अपने ग्राम बासरके (जिला अमृतसर) ले आए। आपका बचपन बेहद गरीबी और मुश्किलों में गुजरा। अत्यधिक सहनशीलता, नम्रता व मिठास आपके स्वभाव का अभिन्न अंग बन गए।

ग्राम बासरके से भाई जेठा जी रोजगार की तलाश में नये बने नगर 'गोइंदवाल' चले आए जिसकी तामीर श्री गुरू अंगद देव जी के हुक्म द्वारा गुरू अमरदास जी की देख-रेख व सिख संगत के सहयोग से हुई थी। यहां रहते हुए भाई जेठा जी खडूर साहिब श्री गुरू अंगद

*ए-१५/८, जनकपुरी, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद (यू. पी.)

Final

देव जी के दर्शन करने जाते रहे और इस तरह आपका मन श्रद्धा और सेवा के रंगों में रंगा गया। श्री गुरू अमरदास जी ने गुरगद्दी पर विराजमान होकर जब गोइंदवाल साहिब को अपना स्थायी निवास बनाया तो भाई जेठा जी भी उनकी शरण में आकर सेवा व सुमिरन में जुट गए। आपके शुभ गुणों को देखकर श्री गुरू अमरदास जी ने १५५३ ई में अपनी सपुत्री बीबी भानी जी का विवाह आपके साथ कर दिया। विवाह के पश्चात इस सुभागी जोड़ी ने श्री गुरू अमरदास जी की अथाह सेवा की, बेटी और दामाद बनकर नहीं बल्कि सच्चे सिख बनकर।

श्री गुरू अमरदास जी ने भाई जेठा जी के निर्मल जीवन, ऊंचे आचरण, प्रभु-प्रेम, निष्काम सेवा-भावना, जरूरतमंदों की मदद और गुरू की आज्ञा सत्य करके मानने के जज्बे को देखकर गुरगद्दी की जिम्मेदारी भाई जेठा जी को सौंपकर उन्हें श्री गुरू रामदास जी में परिवर्तित कर दिया। श्री गुरू रामदास जी के गुरगद्दी पर विराजमान होने का वर्णन भाई गुरदास जी इस प्रकार करते हैं:

बैठा सोढी पातिसाहु रामदासु सतिगुरू कहावै।
पूरनु तालु खटाइआ अंम्रितसरि विचि जोति जगावै। *(वार १:४७)*

श्री गुरू रामदास जी ने श्री अमृतसर की स्थापना की व इसे 'सिखों के केन्द्रीय स्थान' के रूप में विकसित किया। इस प्रकार 'श्री अमृतसर' सिखों के महान तीर्थ के रूप में प्रकट हुआ। आप ने सूही राग में 'चार लावां' के नाम से जानी जाती बाणी उच्चारण की जो सिख धर्म को आपकी महान देन है। सिखों में विवाह की रस्म 'आनंद कारज' के समय इस बाणी का पाठ विशेष रूप से किया जाता है। गुरमति लहर को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए आप ने 'दसवंध' की परंपरा आरंभ की, जो कि श्री गुरू अरजन देव जी के समय पूर्ण रूप में विकसित हुई। गुरसिखी के प्रचार व प्रसार के लिए आप ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सिख प्रचारक नियुक्त किए जिन्हें 'मसंद' कहा जाता था। इसके अतिरिक्त आपने दहेज-प्रथा, सती-प्रथा और पर्दा-प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई।

आपकी बाणी के मुख्य विषय- विरह, वैराग और प्रभु-मिलन की चाह आदि हैं, जैसे:

-कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा
हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥ *(पन्ना ७५७)*
-अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी
सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥ (पन्ना ८३५)

इसके अतिरिक्त श्री गुरू रामदास जी की बाणी में गुरमति सिद्धांतों का भरपूर वर्णन है, जैसे- प्रभु की रजा में रहना, प्रभु-स्तुति, प्रभु की टेक, नाम-सुमिरन, विषय-विकारों पर नियंत्रण, माया से निर्लेप रहना, सेवा-भावना, नम्रता, मीठा बोलना इत्यादि। प्रिंसीपल कुलदीप सिंघ के शब्दों में, 'उनकी रचना स्वयं बहने वाले झरने की तरह है जिसका अनुभव करने से हृदय को शीतलता व शांति मिलती है व अमृत के स्रोत फूट

(शेष पृष्ठ २४ पर)

Final

श्री गुरू ग्रंथ साहिब का सांस्कृतिक प्रभाव

-डॉ. अनीता शर्मा*

श्री गुरू ग्रंथ साहिब पंजाबी संस्कृति की एक अनमोल विरासत है। इसमें जहां एक ओर भारतीय सभ्यता का भरपूर चित्रण मिलता है वहीं दूसरी ओर गुरू साहिबान ने यह चित्रण करते हुए प्रचलित विचारों एवं जीवन के आचार-व्यवहार पर बेरोक टीका-टिप्पणी भी की है। ऐसा करते हुए उन्होंने श्री गुरू ग्रंथ साहिब के माध्यम से ऐसी सभ्यता एवं संस्कृति की स्थापना में योगदान दिया है जो अनन्य है, जो मानवीयता का सार रूप है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें ऐसी विलक्षण सभ्यता का सृजन किया गया है जिसमें मानवीय समता का संदेश है। यह हर समय एवं हर स्थान पर समान रूप से महत्वपूर्ण है, शाश्वत है। इसके अनुसार, यद्यपि मनुष्य के धार्मिक विश्वास भिन्न-भिन्न हैं किन्तु सभी का मूलाधार एक है। निम्न पंक्तियां अनेकता में एकता का अद्वितीय उदाहरण हैं:

-सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ *(पन्ना ६६३)*

-सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ *(पन्ना ९७)*

-ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

-अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भारतीय समाज को एक नवीन दिशा प्रदान की गई है। समाज में मानवीय समता के लिए आवश्यक था कि ईश्वर की एकता पर बल दिया जाए। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के अनुसार सभी जीवों में परमात्मा की ज्योति विद्यमान है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में भ्रातृभाव उत्पन्न हुआ:

साहिबु मेरा एको है ॥ एको है भाई एको है ॥ *(पन्ना ३५०)*

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने आध्यात्मिक क्षेत्र में विलक्षण प्रभाव छोड़ा है। भारत में मुख्यत: दो मत अथवा सभ्यताएं प्रचलित थीं- एक, इस्लाम और दूसरा, हिंदू मत। इन दोनों का आपस में तीव्र मतभेद था। श्री गुरू ग्रंथ साहिब की रचना ने दोनों सभ्यताओं में एकसुरता उत्पन्न करने का कार्य किया। अपनी नवीन विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए श्री गुरू नानक देव जी ने देशाटन करते हुए लगभग सभी तीर्थ-स्थानों की यात्रा की। वे मुसलमानों, उनके सामाजिक एवं धार्मिक नेताओं, काज़ियों और पीरों-फकीरों से मिले और अपने तर्कों द्वारा उन्हें प्रभावित किया। मक्का की यात्रा के दौरान मुल्ला-काज़ियों के इकट्ठ में गुरू जी से पूछा गया कि हिन्दू बड़ा है या मुसलमान, तो गुरू साहिब ने उत्तर दिया:

*प्रवक्ता, एम. जी. एस. एम. जनता कालेज, करतारपुर (जालंधर)

Final

बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।
हिंदू मुसलमान दुइ दरगह अंदिर लहनि न ढोई।
(भाई गुरदास जी, वार १:३३)

श्री गुरू नानक देव जी जहां भी गए, दोनों धर्मों के अनुयाइयों ने उन्हें सुना और उनके विचारों से अत्यंत प्रभावित भी हुए। भाई गुरदास जी का यह कथन इसका मुखर प्रमाण है:

हिंदू मुसलमाणि निवाइआ ॥ (वार १:३७)

इसी प्रकार आधुनिक समय में श्री गुरू ग्रंथ साहिब की दोनों धर्मों में एकात्मकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

श्री गुरू नानक देव जी के समकालीन समाज में योग मत तीसरा बड़ा मत अथवा सम्प्रदाय था। इन योगियों को समाज से मांगकर खाने की आदत थी। इससे अधिक कोई सम्बन्ध वे समाज के साथ नहीं रखते थे। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में योगियों के भेष एवं निकृष्ट जीवन की कटु आलोचना की गई है। उन्होंने योगियों के आलस्यपूर्ण जीवन, कर्महीन साधुओं द्वारा जटाएं बढ़ाकर, नग्न रहकर, शरीर पर राख मलकर, भोली-भाली जनता को गुमराह करने की कड़े शब्दों में निन्दा की है। गुरू जी ने इन योगियों को अपने अकट शक्तिशाली तर्कों द्वारा कैसे प्रभावित किया, इस संदर्भ में भाई गुरदास जी का कथन है:

सबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु अपणा पंथु निराला। (वार १:३३)

इस प्रकार गुरू साहिब की बाणी ने भारतीय समाज में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन को संभव किया:

घरि घरि बाबा पूजीऐ हिंदू मुसलमान गुआई।
छपे नाहि छपाइआ चड़िआ सूरजु जगु रुसनाई।
(वार १:३४)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने भारतीय समाज को सर्वसांझे व्यवहारिक धर्म का मार्ग दिखलाया, सदाचारी जीवन का बोध करवाया और यह शिक्षा दी कि एक नवीन व विलक्षण सिद्धान्त को अपनाकर किस प्रकार जीवन सफल हो सकता है:

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥ (पन्ना २४)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने मनुष्य को समाज में स्वाभिमानपूर्ण जीवन जीने का ढंग सिखाया है। तत्कालीन समाज में मुगल शासकों के अत्याचार एवं अन्याय के कारण क्षत्रिय लोग अपने गौरव को भूल चुके थे। अनेक लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। भयभीत भारतीयों ने अपनी भाषा, वेशभूषा, खानपान और सभ्यता का त्याग कर दिया। श्री गुरू ग्रंथ साहिब की रचना ने भारतीय समाज में स्वाभिमान और आत्मविश्वास का संचार किया:

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने स्वाभिमान रहित मनुष्य को कड़ी चुनौती दी है कि यदि जीते-जी मनुष्य स्वाभिमान का मूल्य एवं महत्व नहीं समझता, मृत्यु के बाद उसकी हालत और भी खराब हो जाएगी:

जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ ॥
(पन्ना १२४२)

श्री गुरू अरजन देव जी की पावन बाणी में नम्रता एवं सभ्य व्यवहार पर बहुत जोर दिया गया है किन्तु गुरू साहिब ने कहीं भी अन्याय एवं अत्याचार के आगे सिर नहीं झुकाया। गुरू साहिब के शब्दों में:

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥
(पन्ना ११०२)

गुरू नानक साहिब ने समकालीन अत्याचारी राजाओं को कसाई तक कहा। आप ने आक्रमणकारी बाबर को ललकारा:

-कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ (पन्ना १४५)
-पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)

गुरू साहिब ने निडर होकर अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई:

सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥
रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥
(पन्ना ३६०)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में पंजाब के लोक-जीवन में विवाह, जन्म और मृत्यु से संबंधित संस्कारों, सती-प्रथा, कर्मकांडों के जाल का, पूजा की विभिन्न विधियों, व्रत आदि से सम्बंधित गलत धारणाओं का जगह-जगह पर खंडन किया गया है। इस खंडन ने पंजाब के लोगों में प्रगतिशील विचारधारा की नींव रखी:

छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥
(पन्ना ४७१)

श्री गुरू नानक देव जी के समय का हिन्दू समाज होम यज्ञ, तीर्थ-गमन, दान, जाति, वर्ण, सूतक-पातक आदि कर्मकांडों, रीति-रिवाजों और लोक-विश्वासों के भंवर में बुरी तरह फंसा हुआ था। कर्मकांडों के पाखंडों द्वारा साधारण जनता धर्म के नाम पर गलत रास्ते पर जा रही थी:

करम कांड बहु करहि अचार ॥
बिन नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥ (पन्ना १६२)

कर्मकांड ने ही धर्म का स्थान ग्रहण कर रखा था। लोगों को कर्ज़ लेकर कर्मकांड निभाने पड़ते थे, लेकिन श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने गुरू साहिबान की मुख्य कर्मभूमि पंजाब के लोगों के दिलो-दिमाग में व्याप्त भ्रम और पाखंड दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब की एक अन्य महत्वपूर्ण देन पंजाबी भाषा और गुरमुखी लिपि का उत्थान है। प्राचीन समय से चली आ रही संस्कृत भाषा को बहुत थोड़े लोग पढ़-लिख सकते थे। लोगों का झुकाव शासकीय भाषा फारसी की ओर बढ़ता जा रहा था। श्री गुरू नानक देव जी ने *'घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी'* कहकर पंजाबी भाषा को अपनी पावन बाणी का माध्यम बनाया और यथोचित लिपि भी प्रदान की। श्री गुरू ग्रंथ साहिब पंजाबी भाषा, साहित्य और सभ्यता का बहुमूल्य भंडार है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने मनुष्य का आचार-विचार निर्धरित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पावन गुरबाणी का मुख्य उद्देश्य अच्छे समाज की स्थापना करना था। पावन गुरबाणी ने समाज और व्यक्ति के आचरण को सर्वोच्चता प्रदान की। गुरू साहिब ने आचरण की उच्चता को अत्यधिक महत्व दिया है, जैसे कि :

-सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

Final

-सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ (पन्ना ४७२)

इसी प्रकार मीठा बोलना और विनम्र रहना भी पंजाबी सभ्यता का अभिन्न अंग बन चुका है:

-मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ (पन्ना ४७०)

-नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ (पन्ना ४७३)

इस प्रकार श्री गुरू ग्रंथ साहिब में सेवा के संदेश ने सेवा करने वाले को आदर का पात्र माना है:

-विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के संदेश--नाम जपना, किरत करना और वंड अथवा बांट कर छकना और कर्मशील होने के सिद्धांत ने पंजाबी सभ्यता में महत्पूर्ण परिवर्तन किया। गुरबाणी, मनुष्य को गृहस्थ मार्ग का पथिक होने के कारण कठोर श्रम करने की प्रेरणा देती है:

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

इसलिए पंजाबी सभ्यता में निठल्ले बैठकर मांगकर खाना अत्यन्त निंदनीय माना गया है:

मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (वही)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने एक ऐसी सभ्यता का निर्माण किया जिसमें कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है। गुरू साहिबान द्वारा चलाई गई संगत और पंगत की रीति ने व्यवहारिक रूप में ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाया है। भाई गुरदास जी की निम्न पंक्तियां स्पष्ट घोषणा करती हैं कि गुरू साहिबान के प्रयत्नों से चारों वर्ण एक हो चुके थे:

चारे पैर धरम्म दे चारि वरनि इकु वरनु कराइआ। (वार १:२३)

श्री गुरू नानक साहिब स्वयं समाज द्वारा दुत्कारे गए वर्ग के साथी बनकर उनके साथ-साथ चले:

-नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस॥ (पन्ना १५)

-सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥ (पन्ना ६२)

श्री गुरू नानक साहिब से पूर्ववर्ती सभ्यता में स्त्री को समानता एवं आदर प्राप्त नहीं था। श्री गुरू ग्रंथ साहिब ने यह महसूस करवाया कि जिस स्त्री से पुरुष का जन्म होता है वह पुरुष से हीन कैसे हो सकती है:

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ (पन्ना ४७३)

इस प्रकार श्री गुरू ग्रंथ साहिब के संदेश द्वारा ही पंजाब की नारी ने समस्त कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के समूचे सांस्कृतिक प्रभाव को शोधपत्र द्वारा प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसलिए इस शोधपत्र में केवल उन्हीं मुख्य तत्वों का परिचय दिया गया है जिन्हें श्री गुरू ग्रंथ साहिब की रचना ने न केवल प्रभावित किया, बल्कि एक विलक्षण पंजाबी सभ्यता और संस्कृति की रचना भी की।

■

Final

भक्त कबीर जी का प्रदेय

-डॉ. दादूराम शर्मा*

भारत में ईसा की पंद्रहवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब एक ओर शक्ति के मद में चूर विजेता मुसलमान इस्लाम के नाम पर धर्म का भयावह विकृत रूप प्रस्तुत कर रहे थे और दूसरी ओर विजित हिन्दू जाति 'आचार: परमो धर्म:' की साधना से विरत होकर जन्मगत और जातिगत श्रेष्ठता के मिथ्या अहंकार के खोल में घोंघे की तरह सिमटती जा रही थी, तभी जातिगत एवं वंशगत श्रेष्ठता को चुनौती देने वाले भक्त कबीर जी का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने धर्म को वाहयाडम्बरों एवं मिथ्याचारों से मुक्त करके समाज को उसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कराया।

भक्त कबीर जी का व्यक्तित्व

भक्त कबीर जी प्रभु के सच्चे भक्त थे। धर्मध्वजी मिथ्याचारियों और पाखंडियों को फटकारते समय उनके शब्दों में जो कठोरता परिलक्षित होती है, वह आचरण की पवित्रता और परमात्मा के साक्षात्कार या तत्त्वदर्शन से उत्पन्न निर्भीक सत्यहृदय का सात्विक गर्व है, कुंठाजन्म उद्दण्ड अहम्मन्यता नहीं। उनकी दृष्टि में धर्म आचरण का विषय है, वाग्विलास का नहीं। भक्त कबीर जी सन्त, सद्गुरु और सत्संग से प्राप्त ज्ञान को पहले आचरण और व्यवहार की कसौटी पर कसते थे तभी उसे औरों से कहते थे। 'जैसी कथनी वैसी करनी' ही उनका स्पष्ट मत था-

जैसी मुख से नीकसै तैसी चालै चाल।

भक्त कबीर जी भारतीय संत-सरणि का एक जगमगाता नक्षत्र है। उनके व्यक्तित्व को निम्नानुसार विश्लेषित किया जा सकता है-

(१) निर्भीक विचारक एवं तत्वोपदेशक :- भक्त कबीर जी का काल धर्म प्रधान था। उस समय समाज का नियमन करने वाले अनेक धर्म प्रचलित थे किन्तु सभी में अनेक विकृतियां आ गई थीं। मुसलमान शासक तलवार के जोर पर आतंक और जुल्म कर रहे थे। तंत्रसाधना में पर्यवसित बौद्ध धर्म इन्द्रिय लोलुपता का शिकार हो चुका था। जातीय गौरव को देश-रक्षा से पूर्णत: पराङ्मुख एवं आत्म-रक्षा में भी असमर्थ जैन जीव-हिंसा से विरत रहने को ही सच्चा धर्म मान रहे थे। सनातन हिन्दू धर्म अनेक सम्प्रदायों में विभाजित होकर बिखर रहा था। अछूतों को कीड़ों-मकोड़ों की जिंदगी जीने पर मजबूर कर दिया गया था। तंत्र-साधना वाले क्रूर शाक्त जीव हिंसा को ही परमार्थ-सिद्धि का सोपान मान रहे थे। सभी धर्मों में वाहयाचार (पूजा-पाठ, तीर्थ-व्रत, हज, रोज़ा-नमाज़) प्रधान हो गया था, अन्त:करण की शुद्धि और आचरण की पवित्रता गौण हो गई थी। तभी

* *अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा बाग, भैरवगंज (सिवनी) (म. प्र.)-४८०६६१*

Final

धार्मिक विकृतियों और सामाजिक विसंगतियों पर निर्ममता से प्रहार करने वाले निर्भीक भक्त कबीर जी का ओजस्वी स्वर भारत में गूंज उठा जिसने सभी का मोह भंग कर डाला।

(क) मूर्ति-पूजा का खण्डन : मुसलमान शासकों द्वारा मंदिरों को ढहाने और मूर्तियों को तोड़ने की आए दिन होने वाली घटनाओं से आम जनता का मूर्ति-पूजा पर से विश्वास उठता जा रहा था। तभी मूर्ति-पूजा का खण्डन करते हुए भक्त कबीर जी ने हिन्दू **'ब्रह्मवाद'** और इस्लामी **'एकेश्वरवाद'** या खुदावाद को समन्वित करते हुए हृदय के भीतर विद्यमान परमात्मा से प्रेम करने की सीख दी।

(ख) धर्म के वाहयाचारों और मिथ्याडम्बरों पर तीखा प्रहार : भक्त कबीर जी अन्तःकरण की शुद्धि और आचरण की पवित्रता को ही सब कुछ मानते थे। उनकी दृष्टि में मंदिर में परमात्मा को खोजना और तीर्थों की खाक छानते फिरना व्यर्थ है :

-कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥
बिनु हरि भगति न मुकति होउ इह कहि रमे कबीर ॥ (पन्ना १३६७)

-कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥
हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥

(पन्ना १३६८)

(२) अपरिग्रही गृहस्थ सन्त : अन्य सम-सामयिक सन्तों की तरह भक्त कबीर जी घर-बार छोड़कर सन्यासी नहीं हुए। वे आजीवन अपनी पत्नी लोई के साथ रहे। गृहस्थी होकर भी परम वीतराग, पूर्ण जितेन्द्रिय, अपने व्यक्तित्व के पारस संस्पर्श से उसे भी उन्होंने प्रभु-नाम की जिज्ञासा बना लिया। लोई जी उनकी साधना मार्ग की सहयात्री रहीं। भक्त कबीर जी अपने प्रभु से बस इतना चाहते हैं:

दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥
खाट मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥
ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥
तेरी भगति करै जनु थींधा ॥
मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥
कहि कबीर मनु मानिआ ॥
मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥

(पन्ना ६५६)

(३) श्रमजीवी साधू : भक्त कबीर जी अन्य साधू-संतों की तरह जीवन-निर्वाह के लिए समाज पर आश्रित नहीं थे। वे कपड़ा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे। उन्होंने स्वयं को जुलाहा कहकर यत्र-तत्र अपने व्यवसाय का स्वाभिमान के साथ उल्लेख किया है।

(४) महान् समाज सुधारक : एक कुशल वैद्य की भांति बीमार समाज की नब्ज पकड़ कर उसके रोगों को परखने और इनका उचित उपचार करने में भक्त कबीर जी सिद्धहस्त थे। तत्कालीन समाज में जातिगत एवं व्यक्तिगत भेद-भाव चरम सीमा पर था और छुआछूत महामारी की तरह फैल रहा था। इन्होंने अपनी साखियों और पदों में सांसारिक वस्तुओं की

नश्वरता और कुलाभिमान आदि की असारता बता-बता कर हमें निरंतर सावधान किया है।

गंदगी हटाकर समाज को साफ-सुथरा रखने वाले, पैरों की सुरक्षा के लिए जूते और तन ढकने के लिए वस्त्र बुनने वाले, शत्रुओं का सफाया करने के लिए अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले, भवनों का निर्माण करने वाले अर्थात समाज के आधार-स्तम्भ और गतिशील बनाने वाले में तथाकथित शूद्र, अछूत कैसे हो गए? गुरुओं, परिजनों (माता-पिता, दादा-दादी आदि), भगवत्प्रतिमाओं के चरण स्पर्श करने वाला समाज, समाज को गतिशील बनाने वाले पैर, इन शूद्रों को अस्पृश्य (अछूत) मानने लगा। यह कितने आश्चर्य की बात है! समाज के पैरों को काट कर पंगु बनाया जा रहा था तो भी उसका समुचित प्रतिकार नहीं हो रहा था। जानने वाले चुप्पी साधे बैठे थे। तभी छुआछूत के उस विकराल दानव को चुनौती देने वाले परम निर्भीक भक्त कबीर जी सामने आये। उन्होंने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा समाज में सदियों से तिरस्कृत-अपेक्षित तथाकथित अछूतों में आत्मविश्वास ही नहीं, आत्मज्योति भी जगाई। सभी मनुष्य जब एक ही परमात्मा द्वारा बनाए गए हैं तब उनमें जातिगत या वर्णगत भेद कैसा? ये भेद-भाव मानव-निर्मित हैं। जात-पात और छुआ-छूत के विरोध में भक्त कबीर जी ने कितने ठोस और अकाट्य तर्क प्रस्तुत किए हैं!

-अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥
(पन्ना १३४९)

-जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
(पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी द्वारा छुआछूत के विरुद्ध चलाए गए इस सर्वव्यापी प्रबल धार्मिक आंदोलन का ही परिणाम था कि समय के समाज को उन्हें भक्त रविदास जी, भक्त पीपा जी, भक्त नामदेव जी आदि भक्तों की प्रथम पंक्ति में सम्मिलत करके उनकी महत्ता के आगे नतमस्तक होना पड़ा।

तथाकथित नीच जातियों से संबंध रखने वाले भक्तों की आध्यात्मिक कमाई तथा सामाजिक उत्थान में उनके व्यापक योगदान के कारण श्री गुरू अरजन देव जी ने भक्त कबीर जी की बाणी को 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब' में स्थान देकर उसे अपने सिख-पंथ में जात-पात और छुआछूत का बहिष्कार करके 'स्पर्शभावना' और 'सामाजिक समता' को ठोस और व्यापक आधार दिया है।

प्रचण्ड तार्किक और कुशल व्यंग्यकार भक्त कबीर जी ने जनता का मोह भंग करने वाले अपने चुभते उपदेशों से 'कौमी एकता' का जैसा ईमानदार और सफल प्रयास किया था और स्वस्थ वातावरण बनाया था, आज हम सब को भक्त जी के उपदेशों के अनुसार फिर वही वातावरण बनाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

५. भक्त कबीर जी के राम : भक्त कबीर जी के राम निर्गुण-निराकार ब्रह्म हैं। वे अवतारवाद को स्वीकार नहीं करते। वे निर्गुण राम को ही जपने का उपदेश देते हैं। तो भी

Final

उन्होंने निर्गुण राम से अपने विविध रागात्मक सम्बंधों की परिकल्पना करके जैसे उन्हें सगुण की समकक्षता में लाकर खड़ा कर दिया है। 'राम' कभी उन्हें संरक्षक पिता के रूप में दिखाई देते हैं, कभी अत्यन्त क्षमाशील ममतामयी मां बन जाते हैं तो कभी अपने अतिशय अनुराग से हृदय की वीणा के तार-तार को झंकृत कर देने वाले प्रियतम के रूप में उपस्थित होकर मन-प्राणों को रससिक्त कर देते हैं। इस आलौकिक मिलन में मान-मनुहा ही नहीं, उपालम्भ भी है। कभी उनकी विरहिणी आत्मा अपने प्रवासी प्रियतम को पुकार उठती है तो कभी आसन्न परिणया (जिसकी अभी-अभी शादी होने वाली हो) युवती बनकर परम प्रियतम से विवाह होने की रसणीय कल्पना में खो जाती है। कभी वे स्वयं को उस गुलाम के रूप में देखते हैं जिसके तन, मन, धन और प्राण सभी पर मालिक का एकाधिकार होता है। वे अपने मालिक राम से अनुरोध करते हैं कि वे उन्हें दुनिया के हाट में बेच दें। लेकिन ग्राहक कौन होगा? वे कहते हैं- 'मेरे मालिक! जब तुम मुझे बेचोगे तो तुम्हीं मुझे खरीदोगे भी और जब तुम मुझे फिर से खरीद लोगे, मैं तुम्हारा हो जाऊँगा, तो मुझे फिर कौन बेच सकेगा?'

वे अपने प्रियतम पर एकाधिकार चाहते हुए कहते हैं कि- 'हे प्रिय! तुम मेरे नेत्रों में आकर बस जाओ फिर मैं अपने नेत्रों के कपाट बंद कर लूं ताकि मैं तुम्हारे सिवाय किसी और को न देख पाऊँ और न ही तुम्हें देखने दूं।'

कैसी भावापन्नता है! भक्त कबीर जी ने मधुराभक्ति प्रधान सारी सम्प्रदाय के अनुरूप परमात्मा को परम प्रियतम और जीवात्मा को पत्नी रूप में स्वीकार करके उसका मानवीकरण किया है। सूफी प्रेम की पीड़ा पारस-संस्पर्श पाकर यह आलौकिक दाम्पत्य प्रणय और भी भावापन्न हो उठा है! उस आलौकिक प्रेमरस का अधिकारी वही साधक पुरुष हो सकता है जो इसके मूल्य के रूप में अपना सिर दे सके, अपने अहंकार को विचलित कर सके, अपनी लौकिक सत्ता को उस परम सत्ता में विसर्जित कर सके:

-कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥
कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥
कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गईं सभ भुलि ॥
ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि ॥
(पन्ना १३७३-७४)

-कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥
एकु अनेकहि मिलि गइआ इक समाना एक ॥
(पन्ना १३७४)

-कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥
(पन्ना १३७५)

■

Final

कर्मकांडों व रूढ़िवादिता के विद्रोही भक्त कबीर जी

*-डॉ. विनोद कुमार सिन्हा**

आज से ६०० वर्ष पूर्व मध्य काल में सर्वसाधारण की आर्थिक तथा सामाजिक गुलामी के बन्धनों को कठोर बनाने के लिए तरह-तरह के विधि-विधान बनाये गये। जाति-व्यवस्था, तीर्थाटन, स्नान, वेद-पाठ, छुआछूत, अवतारोपासना, कर्म-कांड आदि वाहयाडंबर उसी विधि-विधान की शृंखला में आते थे।

उन्हीं दिनों मध्म युग की समग्र स्वाधीन चिन्ता के प्रसंग में भक्त रामानन्द जी का प्रदुर्भाव हुआ। उन्होंने भक्ति को सभी प्रकार की संकीर्णता से दूर करके इतना व्यापक बनाया कि उसमें अमीर-गरीब, निर्गुण-सगुण, हिन्दू-मुसलमान, स्त्री-पुरुष सबका सामंजस्य हो सके।

१३९८ ई में नीरू और नीमा मुस्लिम दम्पत्ति को एक बालक काशी में मिला। वे उस शिशु को अपने घर ले आए और मौलवी को बुलाकर पूछा कि इसका क्या नाम रखा जाए? मौलवी ने कुरान के पन्ने पलटकर एक नाम देखा-'कबीर'। 'कबीर' अर्थात् सबसे बड़ा। वही बालक कबीर समय पाकर मात्र संत, महात्मा और सबसे बड़ा ही नहीं क्रांति-द्रष्टा विद्रोही भी बन गया। विद्रोही मानवीयता का नहीं, सामाजिकता का नहीं- अंधविश्वास का, जातीयता का, रूढ़िवादिता का, संकीर्ण मतवादिता का और धार्मिक पाखंडों का।

बालक कबीर जब युवा हुए और भक्त रामानंद जी का जब शिष्यत्व प्राप्त हुआ तो उन्हें लगा कि तात्कालिक समस्याओं के समाधान के दो ही उपाय हैं- हिन्दू और मुसलमान के वालाचारों तथा पाखंडों की व्यर्थता बताना और मनुष्य को आत्मा के आंतरिक अद्वैत परमेश्वर का साक्षात्कार कराना। जातीयता से बाहर आकर उन्होंने कहा:

पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥
छाडि चले हम कछू न लीआ ॥ (पन्ना ११५९)

क्या हिन्दू क्या मुसलमान- भक्त कबीर जी ने दोनों धर्मों में पांव पसार चुके पाखंड का अपने विद्रोही स्वर में विरोध किया। उन्होंने पंडितों को कहा कि तुम दुर्बुद्धि से ग्रस्त हो गये हो, जो राम नहीं कहते। वेद-पुराण पढ़कर और उन पर आचरण न करके तुम चंदन का भार ढोने वाले गधे बन गए हो। वेद पढ़ने का फल तो यह होना चाहिए कि व्यक्ति सब में राम को देखे, जन्म-मरण के बंधन से छूट जाए, काम सफल हो जाए। तुम यज्ञ में पशुओं की बलि देते हो और उसे धर्म कहते हो। यदि यह धर्म है तो अधर्म किसे कहा जायेगा? तुम अपने को मुनिजन समझ बैठे हो। अगर तुम मुनिजन हो तो कसाई किसे कहा जायेगा? अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हो तो नारद, व्यास का प्रमाण

**ग्राम व पो. - बेलाही, वाया- अथरी, जिला-सीतामढ़ी (बिहार)*

Final

देखो, शुकदेव से जाकर पूछ लो:

पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥
बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे॥
बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥
राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥
जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥
मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥
माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥
नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥
कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥
(पन्ना ११०२-०३)

भक्त कबीर जी दशरथ-पुत्र श्री रामचंद्र जी की बात नहीं कहते। वे उस 'राम' की बात कहते हैं जो सर्वत्र व्यापक हैं, जिनका संबंध तन से नहीं जन-जन की आत्मा से है- *दशरथ सुत तिहुं लोक बखाना, राम नाम का मरम न जाना।* भक्त कबीर जी कहते हैं कि जब सुनता हूँ कि पानी में भी मीन प्यासी है तब मुझे हंसी आती है। तुम अशान्त होकर वन-वन घूमते हो, जबकि सत्य यह है कि ईश्वर तुम्हारे अंदर छिपा है। तुम जहां भी जाओ, जब तक तुम अपनी आत्मा में ईश्वर को न खोज लोगे तब तक सम्पूर्ण संसार तुम्हारे लिए निरर्थक बना रहेगा।

भक्त कबीर जी ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को ईश्वर की पहचान बताते हुए हिन्दू-मुस्लिम एकता का भी उस युग में संदेश दिया था।

भक्त कबीर जी ने केवल हिन्दुओं के पाखंड से ही विद्रोह नहीं किया, मुसलमानों के पाखंड का भी विद्रोह किया। उन्होंने मुल्लाओं से कहा कि तुम तो खुदा को हाजिर-नाजिर कहते हो अर्थात् खुदा सर्वत्र उपस्थित और सर्वदर्शी है, तब फिर मस्जिद पर चढ़कर इतने जोर से क्यों बांग देते हो? क्या तुमने खुदा को बहरा मान रखा है?

-कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

-कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥
(पन्ना १३७७)

एक क्रांति-द्रष्टा विद्रोही की तरह भक्त कबीर जी ने हिन्दू, मुस्लिम, पंडित, मुल्लां, योगी, सिध सबों के कर्मकांडी पाखंड को ललकारा।

नंगे-अनंगे साधुओं और नागाओं को उन्होंने कहा कि अगर नंगा होने से आदमी योगी बन सकता है तो वन में घूमते रहने वाला मृग तो बराबर नंगा रहता है उसे तो बहुत बड़ा योगी बनना चाहिए। अगर सिर के बाल मुड़ाने से आदमी सिध हो सकता है तो भेड़ दर्जनों बार अपने बाल मुंड़वाती है

Final

उसे तो महासिध होना चाहिए:

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥रहाउ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥ . . .
कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥
राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥४॥

(पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी की भाषा कठोर भले ही लगे परन्तु उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और पाखंड का जो विरोध किया वही सत्य है। फिर सत्य का स्वरूप तो कठोर होता ही है। ब्राह्मण अपने को सभी जातियों से श्रेष्ठ मानते हैं तथा अन्य को नीच समझते हैं। भक्त कबीर जी ने यहां तक कह दिया:

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥

(पन्ना ३२४)

मन्दिर और मस्जिद तो धर्म की पहली सीढ़ी हैं- लक्ष्य नहीं। भक्त कबीर जी कहते हैं कि पत्थर की मूर्तियां मोल लेकर पूजना और तीर्थ-यात्रा करना तो मात्र देखादेखी तथा भटकने की स्थिति ही है:

-कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीरथ जाहि॥
देखा देखी स्वांगु धरि भूले भटका खाहि ॥१३५॥
कबीर पाहनु परमेसरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥
इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥१३६॥

(पन्ना १३७१)

मुसलमान का हलाल के नाम पर बेजुबान जानवरों को दुख देकर मारना खुदा के घर में कदापि स्वीकृत नहीं, यह उनका भ्रम मात्र है:

कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥
दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥१८७॥

(पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी सामाजिक, धार्मिक तथा मानवी एकता का पाठ भी पढ़ाते हैं:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

(पन्ना १३४९)

अर्थात उन्होंने स्पष्ट कहा कि पहले अल्लाह हुए, तब उन्होंने प्रकाश उत्पन्न किया, उसी से समस्त जगत बना और जगत के सभी बंदे एक समान हैं, एक ही नूर से उत्पन्न हैं।

भक्त कबीर जी का 'राम' जो जीवन-व्यवहार की कसौटी है, जो 'कथनी' को 'करनी' से जोड़कर 'रहणी' में नहीं उतार पाता, वह राम-कसौटी के योग्य नहीं है:

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥
राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥

(पन्ना ९४८)

प्राणों में राम-तत्व के जागृत होते ही सभी प्रकार के पाप-पुन्य, ऊंच-नीच, अच्छे-बुरे, अपने-पराए का भ्रम दूर हो जाता है। मन असीम चेतना में निमग्न हो जाता है। भक्त कबीर जी को वह असीम चेतना मिल गई थी। भक्त कबीर जी स्वीकार करते हुए कहते भी हैं:

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥

Final

पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥५५॥
(पन्ना १३६७)

इस तरह भक्त कबीर जी ने सारहीन कर्म-कांड, मंदिर-मस्जिद भेद, हिन्दू-मुसलमान के मध्य आपसी विरोधाभास और वर्ण-जाति भेद को त्याग कर सच्चा मानव बनने की शिक्षा दी और कहा:

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥
आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥१॥
कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु॥
(पन्ना १३६४)

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी की बाणी मात्रा में अन्य भक्त साहिबान की बाणी से अधिक है। बावन अखरी, थिती, सतवार इन तीन रचनाओं के अतिरिक्त २२९ शब्द और २४३ श्लोक इसमें संकलित हैं। कुल सत्रह रागों मे भक्त कबीर जी के शब्द रखे गये हैं।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा है- 'हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में भक्त कबीर जी जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।'

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, 'मस्ती, फक्कड़ स्वभाव और सब कुछ को झाड़-फटकार कर रख देने वाले तेज ने भक्त कबीर जी को हिन्दी साहित्य का अद्वितीय व्यक्ति बना दिया है। भक्त कबीर जी ने आत्मा का वर्णन किया है, शरीर का नहीं।'

भक्त कबीर जी ने मिथ्या जातिगत भेदभाव, धार्मिक भेदभाव का ही विरोध नहीं किया बल्कि धन के असीम संग्रह का भी विरोध किया। भक्त कबीर जी ने अपने आप को निरक्षर कहा है परन्तु वे आत्मज्ञानी थे। एक कहानी है कि एक बार कोई पंडित बैल पर बहुत से ग्रंथ लादकर भक्त कबीर जी से शास्त्रार्थ करने गया। भक्त कबीर जी का घर थोड़ी दूर पर था। गाँव में जाकर कुएं पर पानी भर रही पनिहारिन से पूछा कि भक्त कबीर जी का घर किधर है? पनिहारिन ने उत्तर दिया कि हे पोथी पंडित! भक्त कबीर जी का घर तो शिखर पर है जहाँ चींटी का पैर भी नहीं टिक सकता और तुम बैल पर पोथी लादकर जा रहे हो।

मैं अपने इस निबंध का अंत कविवर राम दरश मिश्र की कविता की चंद पंक्तियों से कर रहा हूँ, जिसे उन्होंने फकीर, संत, शिल्पी और युग-द्रष्टा भक्त कबीर जी के संबंध में कहा था-

एक फकीर था,
जो कीचड़ में धंसकर रोता हुआ खोज रहा था
उसमें खोए हुए हीरे को।
एक वियोगिनी थी
अखंड-पीड़ा-सी
जिसकी आँखें पथरा गई थीं,
प्रियतम की राह देखते-देखते।
एक जन शिल्पी था
जो अपनी धमनियों के धागों से, लोगों के लिए
चादर बुन रहा था।
एक विराट पागल था
जो अपना घर जलाकर दूसरों के घरों में
उजाला कर रहा था। ■

Final

बाबा फरीद जी की बाणी का निर्मल नैतिक संदेश

*-डॉ. निर्मल कौशिक**

बाबा फरीद जी ने अपनी बाणी के माध्यम से अपने जीवन के मौलिक अनुभवों को भूले-भटके लोगों तक पहुंचाया, मानव को नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने सामाजिक विषमता दूर करने के लिए मनुष्य को प्रताड़ना करते हुए कहा है कि ईश्वर के दिए हुए पर ही संतोष करना चाहिए, दूसरे की समृद्धि देख कर ललचाना नहीं चाहिए:

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥
(पन्ना १३७९)

बाबा फरीद जी ने कहा कि दूसरों को सुधारने की अपेक्षा मनुष्य को पहले अपने आप को सुधारना चाहिए। मनुष्य को लम्बी आयु की कामना करने की अपेक्षा सत्कार्यों में प्रवृत्त होना चाहिए। अच्छे कर्मों से ही खुदा की प्रसन्नता प्राप्त होती है। गुणहीन तथा बुरे कर्मों का परित्याग करना चाहिए अन्यथा ईश्वर के सम्मुख लज्जित होना पड़ता है:

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥
(पन्ना १३८१)

सारा संसार ही दुखों का घर है। मनुष्य को कभी भी इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि केवल मैं ही दुखी हूं। प्रत्येक प्राणी अपनी अपेक्षा दूसरे को अधिक सुखी समझता है। दूसरे का दुख देखकर अपना दुख कम लगने लगता है। बाबा फरीद जी मानव को आश्वस्त करते हुए कहते हैं:

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥
ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥
(पन्ना १३८२)

इस दुख से मुक्त होने के लिए बाबा फरीद जी ने संसार के भोग-विलासों में लिप्त न होने का संदेश दिया है। आप जी ने गृहस्थी, दरवेशी को साथ-साथ निभाते हुए जीवन व्यतीत किया। वे जल में कमल के समान निर्लेप भाव से अनासक्त रहे। यही उनका वैराग्य सम्बन्धी सन्देश है:

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥
(पन्ना १३८०)

सभी प्राणियों में उस ईश्वर का निवास है। वह सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है, अत: उसे कहीं भी अन्यत्र ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। उसे पाने का मार्ग अत्यन्त सरल है कि किसी भी जीव से दुर्व्यवहार न करो:

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

**अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सरकारी बृजेन्द्रा कालेज, फरीदकोट।*

Final

बाबा फरीद जी की बाणी हरेक मनुष्य-मात्र का भला करने का सन्देश देती है। इससे बदले की भावना समाप्त होगी, अहं का नाश होगा, विश्व-बन्धुत्व की भावना को बल मिलेगा, युद्धों का निराकरण हो सकेगा और विश्व-शान्ति की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा।

सभी प्राणियों को अपने ही समान समझो। किसी को बड़ा-छोटा, ऊंचा-नीचा न समझो। आप जी के अनुसार हमें खाक की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए :

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥

(पन्ना १३७८)

बाबा फरीद जी ने अपने इन अमूल्य उपदेशों के द्वारा जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रतिपादित कर मानवतावाद का धरातल सुदृढ़ किया है। इसीलिए उनकी बाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके अपने समय में थी। मानव-कल्याण हेतु रची गई उनकी यह बाणी आज के अज्ञानान्धकार में पथ-भ्रष्ट मानव का आदर्श मार्गदर्शन करने में सक्षम सिद्ध होगी।

बाबा फरीद जी स्वयं नैतिक गुणों की साकार मूर्ति थे। उन्होंने अपने काव्य में कट्टरवादी अथवा संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाया। उन्होंने तत्कालीन प्रचलित सम्प्रदायों और धर्मों का विरोध करने की अपेक्षा उनके आदर्शों को अपनाकर मानव को एक ऐसा मार्ग दर्शाया जिस पर चलकर वह निर्विरोध सारे विश्व को जीत सकता है। आप जी ने अपनी निर्मल बाणी द्वारा पारस्परिक प्रेम, त्याग, दया, सेवा, बलिदान, उपकार और सहन्शीलता का सन्देश दिया। आप जी ने मानव-प्रेम और विश्व-बन्धुत्व की भावना को जन-जन तक पहुंचाया। इन्हीं गुणों के कारण आप जी अपनी बाणी एवं उसके मूल-भाव को जन-जन के हृदय में बिठा सके। आप जी की पावन बाणी आप जी के कटु एवं यथार्थ अनुभवों की अभिव्यंजना है। यही कारण है कि आप जी की निर्मल बाणी नैतिकता की कसौटी पर आज भी पूरी उतरती है और आज के जीवन में भी उतनी ही सार्थक है। इससे महान और गुण क्या हो सकता है कि आत्म-संयम और इद्रिय- निग्रह कर मनुष्य अपने क्रोध को वशीभूत कर ले और बुरा करने वाले का भी भला करे, जैसे कि :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥

(पन्ना १३८१-८२)

आप जी ने प्रभु-प्रेम के इस महत्व को अपनी बाणी में यौवन की बात करते हुए इस प्रकार अभिव्यक्त किया है:

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा किंती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥

(पन्ना १३७९)

इतना ही नहीं, प्रेम-ललक इतनी तीव्र हो जाती है कि आँधी, तूफान, वर्षा में भी नहीं दबती। आओ! अपने मन-अन्तर में उठे संशय का उत्तर निम्न पंक्तियों में देखें:

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥

Final

चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥
भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥
(पन्ना १३७९)

अपने आप को ऊंचा उठाने, महान बताने के लिए दूसरों के नहीं अपने अवगुणों को देखना चाहिए। अपने को बड़ा कहने वाला व्यक्ति अहंकारी तो हो सकता है महान नहीं। आओ! बाबा फरीद जी के शब्दों में अपने गिरेबां में झांक कर देखें भाव आत्मालोचन करें:

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवा करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

आत्मालोचन के लिए आत्म-नियन्त्रण का होना ज़रूरी है। जो मनुष्य दूसरों की ओर अथवा उनकी धन-सम्पदा आदि देख कर उनसे अपनी आर्थिक स्थिति की तुलना करता है, वह हमेशा दुखी होता है, उसमें सब्र, सन्तोष व सहनशीलता का अभाव रहता है। ये गुण तभी आ सकते हैं अगर मनुष्य अपने आप पर नियन्त्रण रख सके। वह ईश्वर के दिए हुए साधनों पर ही विश्वास रखे, दूसरों के ऐश्वर्य की ओर देख कर उसका मन न ललचाये।

बाबा फरीद जी के अनुसार मनुष्य को निपट साफ-स्पष्ट जीवन व्यतीत करना चाहिए, तभी वह भावी दण्ड से बच सकेगा, जैसे:

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥
(पन्ना १३८१)

आत्म-नियन्त्रण करने वाला व्यक्ति कभी दूसरे पर निर्भर नहीं करता और न ही करना चाहता है। आत्म-नियन्त्रण से ही संयमित होने की आदत बनती है। आत्म-संयम और आत्म-निर्भरता दोनों का काफी निकट सम्बन्ध है। सदाचारी मानव में इन दोनों गुणों का होना बहुत जरूरी है। मानव दूसरे की अधीनता स्वीकार नहीं करता। इससे तो वह मृत्यु को बेहतर समझता है। बाबा फरीद जी ने पराधीनता को नकार कर अपने इष्ट से स्वाधीनतापूर्ण जीवन की मांग की है:

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

सदाचारी मनुष्य आडम्बरों से मुक्त जीवन में विश्वास रखता है। कपटी मनुष्य को कभी भी अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिल सकती। जो मनुष्य (कपटी वेश में) आडम्बरयुक्त पूजा करते हैं, उन्हें कभी भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती।

अज्ञानी मानव उस ब्रह्म को बाहर वन में ढूंढता है जब कि वह उसके अन्दर ही विद्यमान है। अति कठोर तपस्या करके वह अपने शरीर से अन्याय कर रहा है तो भी उसे प्रभु की प्राप्ति नहीं हुई:

फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥
अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥
(पन्ना १३८२)

उदारमना सदाचारी मानव सब में उस

Final

एक ईश्वर को ही देखता है, वह किसी को छोटा नहीं समझता। उसके विचार में हर मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलेगा।

सभी प्राणियों को एक समान जान लेने के बाद आत्म-भाव पैदा हो जाता है, फिर मनुष्य किसी का बुरा कैसे सोच सकता है? फिर तो उसमें ऐसे गुण आ जाते हैं कि अगर कोई उस पर प्रहार भी करता है तो वह उसका उत्तर भी देना ठीक नहीं समझता। वह महानता की उस अवस्था पर पहुंच जाता है कि क्षमा उसका आभूषण बन जाता है। वह उसे क्षमा कर देता है। बाबा फरीद जी के अनुसार:

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥

(पन्ना १३७८)

नम्रता, सदाचारी मनुष्य का सर्वोपरि गुण है, वह अपने आप को सदा अवगुणों से भरपूर और एक सामान्य जीव से अधिक कुछ नहीं समझता। अहं को पास न आने देना ही नम्रता की कसौटी है। बाबा फरीद जी आजीवन इससे बचे रहे। लोग उन्हें दरवेश कहते थे। वे अत्यन्त नम्रता से कहते हैं:

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥

(पन्ना १३८१)

सांसारिक नश्वरता का चित्रण करते हुए अनेक सिद्ध-साधक पुरुषों ने इस संसार से लिप्त होने की बात कही है। यही कारण है कि सभी महापुरुष अपने अनुभव के बल पर मनुष्य को अच्छाई और सच्चाई के मार्ग पर चलने का सन्देश देते हैं। बाबा फरीद जी ने भी अपनी बाणी में संसार की नश्वरता का चित्रण किया है। वहां उनका प्रयोजन भय पैदा करना नहीं, न ही संसार से पलायन की प्रेरणा देना है, उनका अभिप्राय तो मनुष्य मात्र को मृत्यु की वास्तविकता का अनुभव कराकर अच्छे कामों की ओर उन्मुख करना है। वे विलासिता से विमुख होने की ओर संकेत करते हुए कहते हैं:

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥

(पन्ना १३८०)

अन्यत्र वे लिखते हैं:

जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥
झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥

(पन्ना ४८८)

बाबा फरीद जी अपने युग के प्रतिनिधि साहित्य रचयिता थे। उन्होंने अपनी बाणी के द्वारा जनता को सन्मार्ग दर्शाया, अज्ञान के तिमिर को दूर करके ज्ञान की ओर प्रेरित किया। इसके लिए सच्चे गुरू या सच्चे पीर की शरण में जाना पड़ता है। सच्चा गुरू ही माया अथवा विषय-विकारों के पर्दे को हटा कर और ज्ञान का दीपक जला कर मनुष्य के लिए सदाचार का पथ आलोकित करता है जिस पर चल कर मनुष्य सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाकर अपने जीवन को सफल करता है। सच्चा गुरू, ईश्वर-प्राप्ति में सहायक है।

बाबा फरीद जी ने गुरू की शरण में जाने और गुरू के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त

करने वाले को संकटों से मुक्त कहा है। गुरू ही भवसागर से पार लगा सकता है। जो गुरू की शरण में जाते हैं और उसे अपनी सेवा से प्रसन्न करते हैं, उन्हें किसी प्रकार की आंच नहीं आती:

फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥
जो जन पीरि निवाजिआ तिंन्हा अंच न लाग ॥
(पन्ना १३८२)

बाबा फरीद जी ने सब्र और सन्तोष को अच्छे गुणों में सर्वश्रेष्ठ माना है, लेकिन यह भावना तभी आ सकती है अगर मनुष्य ईश्वर की इच्छा को सर्वोपरि मान कर उसी की इच्छानुसार प्रसन्न रहे, उसकी रज़ा में राज़ी रहे। उसकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता। इसी से मनुष्य में सहनशीलता और सन्तोष की भावना प्रबल होती है।

बाबा फरीद जी ने भी मनुष्य के लिए उसी प्रभु की इच्छा के अनुकूल चलने का मार्ग दर्शाया है। उनके द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने से मनुष्य कभी भी भटक नहीं सकता। इतिहास साक्षी है जिसने अपने आप को उसकी (प्रभु की) रज़ा के आगे समर्पित किया उसी को सांसारिक विषयों से मुक्ति मिली। वह सादगीपूर्ण जीवन-यापन करके महानता को प्राप्त हुआ। यही सच्चा और सदाचार का मार्ग है। साधक के लिए उसकी इच्छा (हुक्म) ही सर्वोपरि है। बाबा फरीद जी के अनुसार :

कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥
जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥
(पन्ना १३८२)

बाबा फरीद जी ने अपने काव्य में उन सभी मानवीय गुणों को भली प्रकार संजोया है जो एक आदर्श मानव के लिए अनिवार्य हैं। उन्होंने अपनी बाणी में कटु से कटु सत्य को भी इतनी नम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कहीं भी उपदेशात्मक नीरसता का आभास नहीं होता। अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति भी उनकी बाणी में सहज ही हो गई है। वे स्वयं नैतिक गुणों की प्रतिमूर्ति थे। 'सादा जीवन, उच्च विचार' के धारक बाबा फरीद जी का जीवन नैतिक गुणों से ओत-प्रोत था। उनके नैतिक गुण व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर होते हैं। उनके अनुसार अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने अवगुणों को देख कर अपने को सुधार ले तो सारे समाज का सुधार स्वत: हो जाएगा।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम देखते हैं कि बाबा फरीद जी अपनी सम्पूर्ण बाणी में व्यक्तिगत चेतना पर बल देते हैं। वे मनुष्य को आत्मबोध के लिए प्रवृत्त करते हैं। आत्मालोचन सबसे अनिवार्य तत्व है आत्मबोध के लिए। मनुष्य दूसरों की अपेक्षा अपनी आलोचना स्वयं करे, अपने अवगुणों को दूर करे, अहं से दूर रहे, सत्य का मार्ग अपनाए, हिंसा का मार्ग त्यागे, बुरे का भी भला करे, यही गुण सदाचार की नींव बनते हैं जिस पर नैतिकता के आदर्शों का प्रसाद निर्मित होता है। तब ईश्वरीय प्रेरणा से मनुष्य नि:स्वार्थ भाव से परोपकार, क्षमा, दया, प्रेम, नम्रता, त्याग, सन्तोष, धैर्य, सहनशीलता, सेवा आदि मानवीय गुणों से अलंकृत हो समाज में निर्मलता लाता है। उसका सदाचारपूर्ण जीवन दूसरों के

लिए आदर्श बन जाता है। लोग अच्छाई का अनुसरण स्वयं करने लगते हैं क्योंकि सत्य स्थाई होता है। मानव प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम है। अतः मनुष्य मात्र के प्रति सद्वृत्ति रखना ही सच्ची भक्ति है। यही नैतिकता का मुख्य आधार है। ऐसे आदर्शों को अपनाने वाला व्यक्ति ही समाज में सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक योगदान डाल सकता है। इसी से विश्व-बन्धुत्व एवं मानव-एकता की भावना पनपती है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित बाबा फरीद जी की सम्पूर्ण पावन बाणी इन्हीं नैतिक आदर्शों की प्रेरणा-स्रोत है। बाबा फरीद जी ने निजी अनुभवों से पूर्ण नैतिक आदर्शों को ही अपनी बाणी में अभिव्यक्त किया है जो आज भी भटके हुए लोगों का पथ-प्रदर्शन करते हैं। अतः श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित बाबा फरीद जी की बाणी मानव के इस लोक और परलोक दोनों के लिए ही उपयोगी है।



गुर रामदास राखहु सरणाई

(पृष्ठ ६ का शेष)

पड़ते हैं . . . उनकी बाणी उनके जीवन की तरह ही प्रभु-प्रेम से रंगी हुई है।'

श्री गुरू रामदास जी ने निम्नलिखित ३० रागों मे बाणी लिखी है:

सिरी राग, राग माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गोंड, रामकली, नट नाराइन, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरों, बसंत, सारंग, मल्हार, कानड़ा, कलिआन, प्रभाती।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में सम्मिलित गुरू जी की कुल रचना इस प्रकार है:

सबद-२४६, असटपदियां-३३, छंत-२८, सलोक-१३५, वारों की पउड़ियां-१८३, पहरे-१ सबद, करहले-२ सबद, सोलहे-२ सबद, वणजारा-१ सबद, घोड़ियां-२ सबद।

श्री गुरू रामदास जी ने अपने दोनों बड़े पुत्रों- प्रिथीचंद व बाबा महादेव की जगह अपने छोटे सुपुत्र श्री (गुरू) अरजन देव जी में ईश्वरीय गुणों की बहुतायत देखी, इसीलिए २ आश्विन सं. १६३८ (१ सितंबर, १५८१ ई.) में आप ने गुरगद्दी की महान जिम्मेदारी उनके कंधों पर डाल दी और आप श्री अमृतसर से गोइंदवाल चले गए। गोइंदवाल में ही आप मात्र ४७ वर्ष की आयु में २ आश्विन सं. १६३८ (१ सितंबर, १५८१ ई.) को परम ज्योति में विलीन हो गए। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज आप जी अपनी बाणी द्वारा आज भी अपने प्यारे गुरसिखों को प्रेम से समझा रहे हैं:

हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए
मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥
सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है
मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए
जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥

(पन्ना ५४०)



Final

भट्ट भिक्खा जी : जीवन और बाणी

*-स. गुरमेल सिंह**

भूमिका: इतिहास की पूर्वी धारणा, किसी महान शख्सियत या लोकनायक के जीवन और व्यक्तित्व को अध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्णित करने में अधिक रुचित रही है, इसलिए हमें मध्य काल के लगभग प्रत्येक संत, भक्त, लोकनायक या महान व्यक्ति के जीवन-विवरण किसी प्रमाणिक रूप में उपलब्ध नहीं। उस समय के हमलावरों ने भी बहुत ज्यादा साहित्य/इतिहास नष्ट कर दिया है। इसलिए हमें भट्ट भिक्खा जी के जीवन के बारे में प्रमाणिक और विस्तृत स्रोत नहीं मिलते। यहां पर हम भट्ट भिक्खा जी के जीवन के बारे में मिले कुछ संकेतों के अलावा श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित उनकी बाणी का धर्मशास्त्री दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसके सम्बंध में पहले भट्ट साहिबान के बारे में और उनकी श्री गुरू ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी के बारे में जानना बहुत जरूरी है।

भट्ट लोक: पंडित तारा सिंघ जी नरोत्तम के अनुसार, 'भट्ट का अर्थ पंडित, स्वामीपन्न प्रशंसा करके आजीविका कमाने वाले बंधीजन हैं।'[१] ज्ञानी हजारा सिंघ जी के अनुसार, 'यह एक सत्कारयोग्य खिताब है, जो पहले शहजादों को और फिर बाद में बड़े-बड़े विद्वानों को दिया जाता था। फिर उन महाकवियों का नाम हो गया जो कीर्तन करते थे।'[२] भाई काहन सिंघ जी नाभा 'भट्ट' के अर्थ, 'प्रशंसा करने वाला कवि, राज दरबार में राजा और शूरवीरों का यश गायन करने वाला पंडित'[३], करते हैं।

भट्ट लोक अधिकतर राजपूतों की जातियों, जैसे कि चौहान, पवार, राठौर, तोमर, जादो आदि की आवभगत का काम करते थे। आवभगत का काम करने के कारण तथाकथित उच्च जातीय ब्राह्मण इन्हें अपने से नीची जाति का ब्राह्मण मानते थे। भट्ट परिवार राजपूत घरों में खुशी/गमी के मौकों पर जाकर उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रशंसा करके और बख्शिश प्राप्त करके अपना निर्वाह करते थे। जो भी खुशी या गमी की घटना होती, उसे ये लोग सन्-संवत् के अनुसार अपनी बही में लिख लेते और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संभाल कर रखते। आज ये भट्ट-बहियां इतिहास का एक व्यापक स्रोत बनकर सामने आ रही हैं।

बाणीकार-भट्ट साहिबान: बाणी-रचयिता भट्ट साहिबान, गुरू साहिबान के कुल-भट्ट नहीं थे, बल्कि सिख सेवक थे। बाणीकार भट्ट 'सरस्वती नदी के किनारे पर बसे सारस्वत ब्राह्मण थे . . . नदी के इधर बसने वाले भट्ट सारस्वत और दूसरी तरफ बसने वाले गौढ़ कहे जाने लगे. . . ये अपने आप को कौशिश ऋषि की संतान मानते हैं।'[४] बाणीकार भट्ट या इनके पूर्वज सुलतानपुर[५] के निवासी थे। ध्यान रहे

**प्रोजैक्ट फैलो, धर्म अध्ययन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला। मो: ९८५५०-३३३८४*

कि इनका पूर्वज कौशश ऋषि मिथिहास का पात्र नहीं।

बाणीकार भट्ट साहिबान की गिणती के बारे में विचार-भिन्नता है। 'गुरबिलास पातशाही छेवीं'[६] के अनुसार इनकी गिणती १७ है और महाकवि संतोख सिंघ जी का भी यही विचार है।[७] पंडित तारा सिंघ नरोत्तम,[८] ज्ञानी हजारा सिंघ[९], डा. चरण सिंघ[१०] आदि विद्वान चाहे भट्टों की गिणती १७ करते हैं, परन्तु इनके द्वारा दी गई नाम-सूचियों में भिन्नता है। प्रो. साहिब सिंघ जी[११] ने बाणी के अंक-प्रबंध को आधार बना कर भट्ट-गिणती ११ की है, जो अब लगभग सर्वप्रमाणित हो चुकी है। ११ भट्ट साहिबान ये हैं:

(१) कल्ह (कलसहार, टल) (२) जालप (३) कीरत (४) भिक्खा (५) सल्ह (६) भल्ह (७) नल (८) गयंद (९) मथरा (१०) बल्ह (११) हरिबंस।

भट्ट भिक्खा जी: श्री गुरू ग्रंथ साहिब में शामिल भट्ट-बाणी में से अधिकतर बाणी भट्ट कल्ह अथवा कलसहार की है।[१२] इस तर्क के आधार पर कुछ विद्वानों का अनुमान है कि गुरू-दरबार में आने वाले भट्टों का यह मुखिया, सरदार या जत्थेदार था।[१३] परन्तु भट्टों के कुर्सीनामा अथवा सज़रा[१४] भट्ट भिक्खा जी को मुखी सिद्ध करता है। भाई गुरदास जी भट्ट 'भिखे' को श्री गुरू अमरदास जी के सिखों की नामावली में शामिल करते हैं:

भिखा टोडा भट दुइ धारू सूद महलु तिसु भारा।
सुलताने पुरि भगति भंडारा ॥ (वार ११:२१)

'सिक्खां दी भगतमाल'[१५] के अनुसार ये भट्ट गुरू अरजन साहिब जी के दरबार में आकर विनती करते हैं,' . . . जी हम तीसरी पातशाही के सिख हुए हैं . . .।'

भट्टां दी बंसावली[१६] भगीरथ से शुरू होती है, इसकी नौवीं पीढ़ी में से भट्ट रईया जी के छः पुत्रों में से भट्ट भिक्खा जी भी एक हैं। भट्ट मथरा, जालप, कीरत आदि ये भट्ट भिक्खे के ही पुत्र थे। इस तरह कलसहार और गयंद दोनों भाई, भट्ट भिक्खे के भाई, चोखे के पुत्र (भाव भट्ट भिक्खे के भतीजे) थे। भट्ट भिक्खे के दो पुत्र 'मथरा' और 'कीरत' छठे पातशाह के समय शहीद हुए थे। भट्ट मथरा की शहीदी ३ अक्तूबर, १६२१ ई. को रूहीला के स्थान पर चंदू पुत्र करम चंद और भगवान दास घेरड़ की फौज के साथ लड़ाई करते हुए हुई।[१७] 'गुरबिलास पातशाही छेवीं' के अनुसार भट्ट भिक्खे के पुत्र मथरा ने सेनापती बैरम खां के साथ बड़ी बहादुरी के साथ लड़ाई की।[१८] इसी तरह भिक्खे का दूसरा पुत्र कीरत भी श्री गुरू हरिगोबिंद साहिब जी के समय मुरतज़ा खां के साथ लड़ाई करता हुआ १३ अप्रैल, १६३४ ई. को गुरू के चक्क (अमृतसर) में शहीद हुआ।[१९]

भट्ट भिक्खा जी के पुत्र कीरत भट्ट के पड़पोते नरबद सिंघ की चौथी-पांचवीं पीढ़ी[२०] में स. सरूप सिंघ और स. सेवा सिंघ ने सिख इतिहास के बहुमूल्य ग्रंथ 'गुरू कीआं साखीआं और शहीद बिलास' की रचना की और स. सरूप सिंघ की तीसरी पीढ़ी में से हुए छज्जू सिंघ भट्ट ने इन ग्रंथों को सम्पादित कर दिया है।[२१]

Final

उपरोक्त विचार से हम देखते हैं कि भट्ट भिक्खा जी और इनका परिवार काफी समय तक गुरू-घर के साथ जुड़ा रहा और इन्होंने जहां बाणी का उच्चारण किया, वहीं सिख इतिहास भी लिखा और रण-तत्ते में वैरी के साथ लड़ कर शहीदी भी प्राप्त की, इसलिए इनकी अद्वितीय देन है।

भट्ट भिक्खा या इसके परिवार का गुरू-घर के साथ सम्बंध कब से जुड़ गया, यह सवाल भी विचारयोग्य है। प्रो. साहिब सिंघ जी का मत है कि भट्ट श्री गुरू अरजन देव जी के समय में उस समय गुरू-दरबार में आए, जब श्री गुरू अरजन देव जी गोइंदवाल में थे और भट्टों ने गुरू साहिब के हजूर आकर सारी बाणी उच्चारित की।[२२] प्रो. साहिब सिंघ जी के इस मत को निःसंकोच मान लेने में बहुत सी कठिनाइयां हैं। पहली बात तो यह है कि भट्ट भिक्खा जी, इनके पुत्र जालप जी आदि केवल तीसरे पातशाह की प्रशंसा में ही बाणी का गायन करते हैं। इन्होंने श्री गुरू अरजन देव जी सम्बंधी कोई बाणी (सवय्ये) नहीं उच्चारण की।[२३] इतिहास के दृष्टिकोण से हमारे पास भट्ट भिक्खा जी के साथ अन्य भट्टों के श्री गुरू अमरदास जी के दरबार में आने के हवाले भी मौजूद हैं।[२४] भट्ट भिक्खा जी स्वयं अपनी बाणी में श्री गुरू अमरदास जी के दरबार में एक साल की भटकन के बाद पहुंचे थे, वे ऐसा ज़िक्र करते हैं- *'बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥'* पांचवें पातशाह गुरू अरजन साहिब जी के भतीजे (प्रिथी चंद के पुत्र) सोढी मेहरबान का पुत्र सोढी हरि जी तो भट्ट 'काले' (भाव कल्ह अथवा कलसहार), गुरू नानक देव जी, गुरू अंगद देव जी, गुरू अमरदास जी के दरबार में आने का ज़िक्र करता है।[२५] याद रहे, भट्ट कलसहार, भट्ट भिक्खा जी के भाई चोखे जी का पुत्र है और इसकी बाणी अन्य भट्ट साहिबान से अधिक है।[२६] अतः ऐसा हो सकता है कि भट्ट भिक्खा के परिवार का सम्बंध गुरू-घर के साथ गुरू नानक साहिब के समय से ही जुड़ गया हो।

भट्ट भिक्खा जी की बाणी: भट्ट भिक्खा जी के हमें सिर्फ दो शब्द/सवय्ये प्राप्त हैं, जो उन्होंने तीसरे पातशाह श्री गुरू अमरदास जी की प्रशंसा में कहे और ये शब्द हमें श्री गुरू ग्रंथ साहिब[२७] में प्रमाणित रूप में सुरक्षित मिलते हैं।

विषय-वस्तु की दृष्टि से पहले किए गए संकेतों के अनुसार ये सवय्ये श्री गुरू अमरदास जी की महिमा में हैं। भट्ट भिक्खा जी के अनुसार गुरू 'ज्ञान का मुजस्समा' हैं जो जीवन-तत्त की समझ देता है, विकारों को समाप्त करके मन को बस में कर देता है, निरंकार के हुक्म में कार्य करता और करवाता है। ऐसे गुरू श्री गुरू अमरदास जी हैं जो कलयुग मे 'करता पुरख' का स्वरूप हैं। मैं (भिक्खा) बहुत से साधू-संतों के पास जा चुका हूं, जो सिर्फ कहते हैं, परन्तु रहित में नहीं रहते। सभी प्रभु के नाम को भूल कर दूसरी तरफ (मोह-माया के रास्ते) भटक रहे हैं। केवल श्री गुरू अमरदास जी को मिलकर जीवन-तत्त का ज्ञान हुआ है।

Final

भट्ट भिक्खा जी की बाणी बहुत कम मात्रा में होने के बावजूद कला अथवा साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी बाणी में श्री गुरू अमरदास जी के महान व्यक्तित्व के, उनके दरबार के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं:

गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥
सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥
काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥
निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥
कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥
गुरू मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥१॥१९॥

रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥
कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥२॥२०॥ *(पन्ना १३९५-९६)*

संदर्भ सूची:

१. गुरू गिरारथ कोष (उत्तरार्द्ध), (पत्थर छापा), राजिन्द्र प्रैस, पटियाला-१८९८, पृष्ठ-४४४

२. श्री गुरू ग्रंथ कोष (संपा.) भाई वीर सिंघ, खालसा ट्रैक्ट सोसायटी, अमृतसर-१९८३ (पांचवीं बार), पृष्ठ-६८७

३. महान कोष, भाषा विभाग, पटियाला-१९९९ (छठी बार), पृष्ठ-९०४

४. गि. गुरदित्त सिंघ, 'भट्ट ते उन्हां दी रचना', आलोचना, अंक-८, जिल्द-७, अक्तूबर-१९६१, पृष्ठ-५६

५. यह स्थान लाडवा (परगना), जिला करनाल (हरियाणा) में है।

६. गुरबिलास पातशाही छेवीं, (संपा.) ज्ञानी जोगिंदर सिंघ जी, डॉ. अमरजीत सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी), अमृतसर।

७. श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ, (संपा.) भाई वीर सिंघ, खालसा समाचार, अमृतसर, जून-१९२९, रास-३, अंसू-४८, बंद ९-११, जिल्द-६, पृष्ठ-२१२३.

८. पूर्व अंकित, पृष्ठ-४४४.

९. पूर्व अंकित, पृष्ठ-६८५.

१०. श्री गुरू ग्रंथ बाणी ब्यौरा, श्री चरणहरि विस्तार, (संपा.) डॉ. बलवीर सिंघ, मैनेजर, खालसा समाचार, अमृतसर, अप्रैल-१९४१, पृष्ठ-३८९.

११. श्री गुरू ग्रंथ साहिब दरपण (पोथी दसवीं), राज पब्लिकेशन, जालंधर, जनवरी-१९७२ (तीसरी बार), पृष्ठ-३९९

१२. भट्ट-बाणी के कुल १२३ सवय्यों में से ५४ केवल भट्ट कल्ह जी के हैं। इनमें से सवय्ये म: १ के १०, म: २ के १०, म: ३ के ९, म: ४ के १३ और म: ५ के १२ हैं। (१०+१०+९+१३+१२=५४)

१३. प्रो. साहिब सिंघ भट्टां दे सवईये सटीक, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर-१९७२ (पांचवीं बार), पृष्ठ-५६

१४. आलोचना, अंक-८, जि. ७, पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना, अक्तूबर-१९६१, पृष्ठ-६७. ऊपर दिए भट्ट-बही पाठ पर आधारित अनेक सज्जनों ने भट्ट-सज़रे तैयार किए हैं (देखो: डॉ. प्यार सिंघ, पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाबी साहित्य दा इतिहास, भाग-१, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़, पृष्ठ-२७९; डॉ. बलवंत सिंघ (संपा.), श्री गुरू अमरदास अभिनंदन, गुरू नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर-१९८५, पृष्ठ-१८९; डॉ. राय जसबीर सिंघ (संपा.), गुरू अमरदास : स्रोत पुस्तक, गुरू नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर-१९८६ पृष्ठ-२४; गुरमेल सिंघ, गुरू अंगद देव: स्रोत पुस्तक; प्रो. साहिब सिंघ, गुरमति ट्रस्ट, पटियाला)

१५. (संपा.) भाई वीर सिंघ, भाई वीर सिंघ साहित्य सदन, नई दिल्ली-१९९६ (छठी बार), साखी-६०, पृष्ठ-९५.

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

Final

कविता

जय जय पंथ खालसा . . .!

*-इंजी. करमजीत सिंघ नूर**

जय-जय पंथ खालसा, जिसने भारत देश बचाया !
तोड़ गुलामी की जंजीरें, हमें आजाद कराया।
केसगढ़ में कलगीधर ने, जब कौतक दिखलाया।
नीची जात के लोगों को, ऊंचों के संग मिलाया।
एक ही बाटे में उन सबको, जब अमृत पिलाया।
सही मायनों में लोकतंत्र, गुरू गोबिंद सिंघ ने लाया।
नीचों को भी सर ऊंचा करके चलना सिखलाया।
देकर उन्हें शक्तियां सारी, खालसा पंथ सजाया।
चिड़ियों के संग बाज लड़ाये, गीदड़ शेर बनाया।
जब-जब देश पे बनी मुसीबत, तब-तब आगे आया।
जय-जय पंथ खालसा . . .।
बाहर से हमलावर जब-जब, हिंदोस्तान में आये।
पंथ-खालसा ने तब-तब, उनके छक्के छुड़वाये।
लूट कर दौलत और जवानी, जब भागा अब्दाली।
चोर को पड़ गये मोर राह में, कर दिया उसको खाली।
बहू बेटियों को आदर से, उनके घर पहुंचाया।
जय-जय पंथ खालसा . . .।
नादिरशाह ने कहा, 'जकरिया खान जरा बतलायें।
मुझसे टक्कर लेने वाले, सिख हैं कौन बलायें?'
'पेड़ों के पत्ते खाते हैं, जंगल में है डेरा।
घोड़ों की पीठों पर होता, इनका रैन बसेरा।
हरिमंदर है शक्ति इनकी, गुरबाणी सरमाया।'
जय-जय पंथ खालसा . . .।
'यह वोह आंधी है, जिसको कोई रोक न पाया।
उतने और बड़े हैं, मैंने जितना इन्हें मुकाया।'
'ऐसा है तो खान जकरिये, सुन लो बात हमारी।
राज करेंगे एक दिन, दुनिया मानेगी सरदारी।'
गुरू गोबिंद सिंघ का बेटा है, साहिब कौर का जाया।
जय-जय पंथ खालसा, जिसने भारत देश बचाया।
तोड़ गुलामी की जंजीरें, हमें आजाद कराया।

**३/६१, गार्डन कॉलोनी, जालंधर। मो: ९८१५०२३९७०*

Final

गुरबाणी राग परिचय-६

राग आसा

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरू ग्रंथ साहिब में श्री राग, माझ राग तथा गउड़ी राग में प्रभु-यश-गायन, नाम-भक्ति तथा नाम-रस के द्वारा आत्मिक ज्ञान की पृष्ठभूमि का सृजन किया गया है। राग आसा के उदात्त स्वर से गुरबाणी में विस्मय और रहस्य की स्वर-लहरी तरंगित होती है। राग आसा का स्वर आध्यात्मिक साधना के अनुभव की रसमयी अभिव्यक्ति को झंकृत करने में पूर्णतः समर्थ है। भाई वीर सिंघ जी के द्वारा रागों पर दी गई टिप्पणी के अनुसार श्री राग और मारू राग मिल कर मेघ राग के प्रभाव से आसा राग निर्मित करते हैं। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दी गई रागमाला में आसा राग को मेघ राग की रागिनी के रूप में उल्लेख किया गया है:

पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ (पन्ना १४३०)

आसा राग का आरम्भ दो महत्वपूर्ण पावन बाणियों से होता है- श्री गुरू नानक पातशाह द्वारा रचित 'सोदरु' तथा श्री गुरू रामदास जी द्वारा रचित 'सो पुरखु'। 'सोदरु' में हम प्रभु के निवास के उस 'दर' पर पहुंचते हैं जहां बैठकर वह सभी का पालन करता है। सभी उसका गायन कर रहे हैं। प्रभु का गायन वही कर रहे हैं जो गुणों के कारण उसे प्रिय हैं और उसके प्रेम में अनुरक्त हैं:

सोई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ (पन्ना ३४७)

'सोदरु' बाणी एक छंद के रूप में है। श्री गुरू नानक देव जी ने इसमें निराकार प्रभु के विराट स्वरूप की झांकी दी है तथा इसके अंत में अपना सन्देश दिया है- हे प्रभु! तेरी रजा में रहना ही मेरी शांति है:

. . .नानक रहणु रजाई ॥ (पन्ना ६)

झूठ की दीवार तोड़ने के लिए तथा प्रभु के समक्ष सत्य-साधक होने के लिए प्रभु की रजा में चलना गुरू नानक साहिब का प्रिय संदेश है:

हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ (पन्ना १)

'सोदरु' बाणी को जपु जी साहिब में कुछ पाठान्तर से अंकित किया गया है। रहरासि साहिब के सबदों में भी यह बाणी प्रथम स्थान पर है।

श्री गुरू रामदास जी द्वारा रचित 'सो पुरखु' बाणी छन्द के अनुरूप पांच पदों में है। प्रत्येक पद में माया से अतीत प्रभु (निरंजन) के गुणों की व्याख्या की गई है। वह सच्चा सृजनहार है, सर्वनिरंतर है, मुक्तिदाता है तथा सभी का पालनकर्त्ता है। अन्तिम पद में इन

**सी-१२७, गुरमति प्रचार केन्द्र, गुरू तेग बहादर नगर, इलाहाबाद।*

Final

सभी गुणों का समाहार है:

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी
तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा
तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥
(पन्ना ३४८)

राग आसा में सम्पूर्ण बाणी का विस्तार १४२ पन्नों में है। अन्य रागों की भांति इसमें पूर्ण गुरू-मंत्र (मूल-मंत्र) का उपयोग आरम्भ में ही नहीं अपितु तीन बार हुआ है। आरम्भ में सबद, असटपदी और छंत को एक वर्ग में रखा गया है। पुन: वार से पहले पूर्ण गुरू-मंत्र है तथा भक्त-बाणी में आरम्भ में भी पूर्ण गुरू-मंत्र दिया गया है।

श्री गुरू नानक देव जी के ३८ सबदों में से चार सबद रहरासि साहिब में अंकित हैं। प्रथम दो सबदों *'सुणि वडा आखै सभु कोइ'*, तथा *'आखा जीवा विसरै मरि जाउ'* में प्रभु के निराकार स्वरूप तथा नाम-सुमिरन का अनुभव व्यक्त है, अन्य दो सबदों में क्रमश: माया और विकारों से युक्त सरोवर का तथा प्रभु के संबंध में विभिन्न वादों का निराकरण किया गया है:

तितु सरवरड़ै भईले निवासा . . ॥ (शब्द २९)

(मेरा निवासा माया के सरोवर में है)

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ (शब्द ३०)

(छ: दर्शन हैं- न्याय, वैशेषिक, योग, सांख्य, मीमांसा तथा वेदांत। छ: पथ दर्शाने वाले हैं तथा उनके छ: उपदेश हैं)

सबदों के उदात्त स्वर की एक बानगी सतिसंग रूपी सरोवर के वर्णन में है। सतिसंग के सरोवर में संत-जन सुन्दर कमल पुष्प हैं। सतिसंग सरोवर उन्हें नाम रूपी जल से सदा विकसित किये रहता है तथा सुगन्धि और सुंदरता प्रदान करता है:

एको सरवरु कमल अनूप ॥
सदा बिगासै परमल रूप ॥ (पन्ना ३५२)

श्री गुरू अमरदास जी के सबदों में एक प्रभु में निष्ठा का वर्णन है। हरि-नाम-सुमिरन मूल का सिंचन है, हरि-सृजन का मूल है, माया हरि की डाली है, उससे प्रेम करना फलदायक नहीं है। श्री गुरू रामदास जी के सबदों का आरंभ भी प्रभु के सत्य-स्वरूप वर्णन से हुआ है। सृजनहार प्रभु के इस सबद का भी 'रहरासि साहिब' में चयन किया गया है।

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ (पन्ना ३६५)

राग के अंतर्गत गायन की विशेष पद्धति (घरु) कहलाती है। श्री गुरू अरजन देव जी के १६३ सबदों को गायन-पद्धति के क्रमांक २ से १७ तक दिया गया जिनमें घरु १६ के अंतर्गत कोई सबद नहीं है।

वर्णन शैली के अनुसार सबदों को चार वर्गों में बांट सकते हैं:-

प्रथम वर्ग में लम्बी मात्रिक दो पंक्तियों के चौपदे हैं। इस वर्ग में चौपई के चार चरण के पद वाले चौपदे भी हैं। इसमें विषय का पर्याप्त विस्तार से विवेचन है। प्राय: जीव के स्त्री मानकर विभिन्न मनोभावों को दर्शाया गया है। जीव-स्त्री के आचरण के संबंध में उपदेशपूर्ण विवरण हृदयग्राही है:

Final

संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥
(पन्ना ४००)

वर्ग दो के अन्तर्गत सबदों के पदों की पंक्ति चौपई की भांति है तथा प्रत्येक पद में दो चरण हैं। अपेक्षाकृत कम विस्तार में भाव-प्रसार का सुंदर निर्वाह किया गया है।

इस संसार में हमारा जीवन एक रात्रि के समान है। आरंभ में बालों का कालापन रात्रि का संकेत करता है, फिर बुढ़ापे में बालों का सफेद होना, सवेरे के उजाले की तरह है। संसार में हम अपना जीवन सोने में व्यतीत करते हैं और वृद्धावस्था में पछताते हैं। इस विषय को एक सखी से वार्तालाप के माध्यम से बताया गया है। हे सखी! मेरे हृदय में प्रभु से मिलन का सहज आनंद है, इससे मुझे आलस्य अनुभव नहीं होता। प्रभु ने मानव जीवन देकर मेरे हाथ में नाम-अमृत रखा किन्तु मेरी लापरवाही से वह हाथों से फिसलकर भूमि पर गिर गया है। इस विषय में सृजनहार को दोष नहीं, मैं स्वयं ही अहंकार और स्वाद के लोभ में दबी हुई हूं। लेकिन मन-भ्रम का अंधकार सतिसंग से मिट जाता है तथा परमात्मा ने अपने गले लगा लिया है:

सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥
भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥
प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥
प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥
कर महि अंम्रितु आणि निसारिओ ॥
खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥
सादि मोहि लादी अहंकारे ॥
दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥
साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥
नानक मेली सिरजणहारे ॥ (पन्ना ३८९)

श्री गुरू अरजन देव जी के सबदों का तीसरा वर्ग दुपदों तथा तिपदों का है। दुपदे के एक पद में चार चरण होने पर भाव की व्याख्या हो जाती है तथा दो चरण होने पर भाव प्रेषण संक्षिप्त होता है। चार चरणों का एक दुपदा मानव जीवन की सार्थकता की व्याख्या करता है:

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना ३७८)

श्री गुरू अरजन देव जी के सबदों का चौथे वर्ग में राग की विशेष शैली में लिखी पंक्तियों में लिखे सबदों का है। इनको गायन के लिए तबले की संगति की रीति पड़ताल है जिसका शीर्षक घरु १५ के आरम्भ में दिया गया है तथा घरु १७ के सबद भी इसी शैली में हैं:

गोबिंद गोबिंद करि हां ॥
हरि हरि मनि पिआरि हां ॥
गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥
अन सिउ तोरि फेरि हां ॥
ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥ (पन्ना ४०९)

राग आसा के सबदों के अंत में श्री गुरू तेग बहादर जी का एक सबद है जिसमें उन्होंने भौतिक पदार्थों में लिप्त मन की व्यथा का वर्णन किया है। राम भजन छोड़ कर मन

Final

कुत्ते की तरह दर-दर भटक रहा है:

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ . . .
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ . . .
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥ (पन्ना ४११)

सबदों के बाद असटपदियों में भी अहंकार की घाटी से उतर कर सतिसंग सरोवर में स्नान के लिए आह्वान किया गया है। माया-मोह के कारण मन संसार रूपी जंगल में घूम रहा है। उसका रूप एक पागल हाथी के समान है:

मनु मैगलु साकतु देवाना ॥
बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥ (पन्ना ४१५)

लालसा को मन से ही संसार-समुद्र से पार हो सकते हैं। चतुर पथिक रास्ता बदल कर जा रहे हैं; मायावी जीवों को प्रभु प्यारा नहीं लगता:

चले चलणहार वाट वटाइआ ॥
धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ (पन्ना ४१९)

परमात्मा का नाम जप कर जन्म-मरण का क्लेश मिटाया जा सकता है:

जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥
नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥ (पन्ना ४२२)

श्री गुरू नानक देव जी की राग आसा की २२ असटपदियों के मध्य में सामाजिक सरोकार के यथार्थ तथ्य को उजागर किया गया है। गुरू नानक पातशाह ने अपनी यात्रा से लौट कर १५२२ ई में सैदपुर में हुए जनसंहार को देखा । करुणा से द्रवित गुरू नानक साहिब का हृदय चीत्कार कर उठा। राग आसा के एक सबद में उन्होंने प्रभु से प्रश्न किया- *'एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥'* हे प्रभु! तुम सभी के रखवाले हो। अगर शक्तिमान, शक्तिवान को मारता है तो मन में रोष नहीं होता, किन्तु यदि शक्तिवान शेर-गायों के झुण्ड को मारे तो फरियाद स्वामी से ही होती है। इसी सन्दर्भ में असटपदी ११ में सैदपुर महिला उत्पीड़न का चित्र अंकित किया गया है। उनका रूप और धन ही उनके लिए बैरी बन गया है। असटपदी १२ में सैदपुर के युद्ध के बाद बदले हुए दृश्य का वर्णन है। गुरू नानक पातशाह की बाणी एक सजग साधक की बाणी है, जिसका अवसान प्रभु के भाणे में संतोष कर लेने से होता है किन्तु बाद में संत-सिपाही के व्यवहारिक पक्ष को अपनाकर अन्याय का समाधान किया गया।

राग आसा में श्री गुरू अमरदास जी की १५ तथा श्री गुरू अरजन देव जी की ३ असटपदियां हैं। श्री गुरू अरजन देव जी की असटपदी के आरम्भ में सूत्र रूप में सतिगुरू सिखों को सेठ का वणजारा कहते हैं जो नाम-रूपी पूंजी से व्यापार करता है, उसे पांच को मनाना और बसाना चाहिए और पांच को नाराज करके भगा देना चाहिए। धारण करने योग्य गुण हैं- 'सत्य, संतोष, दया, धर्म, धैर्य' तथा त्याग करने योग्य विकार हैं- 'काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार।'

पंच मनाए पंच रुसाए ॥
पंच वसाए पंच गवाए ॥ (पन्ना ४३०) ■

Final

गुरबाणी चिंतनधारा-१३

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

ੴ सतिगुरू प्रसादि ॥

एक अद्बितीय परमात्मा, सतिगुरू की कृपा से प्राप्त होता है।

'जापु' इस बाणी का नाम है, जिस का अर्थ है- स्मरण कर।

श्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

दशम पातशाह के पावन मुख से उच्चारण की गई बाणी।

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

'छपै' छंद का नाम है। 'त्व प्रसादि' अर्थात तेरी कृपा से।

हे अकाल पुरख! तेरी रहमत से यह बाणी उच्चारण करता हूं।

चक्क्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह॥
अचल मूरति अनभउ प्रकास, अमितोजि कहिज्जै॥
कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै ॥
त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत ॥
तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

गुरू कलगीधर पातशाह उस अकाल पुरख की सिफ्त-सलाह करते हुए फरमान करते हैं कि हे अकाल पुरख! हे वाहिगुरू! तेरा स्वरूप अकथनीय है अर्थात् तेरे स्वरूप को मुकम्मल रूप से कोई बयान नहीं कर सकता। हे परवरदिगार! तू तो मानो ऐसा है, जिसके कोई चक्र अर्थात् गोल रेखाएं भी दिखाई नहीं देतीं। समस्त प्राणियों के शरीर पर कुछ रेखाएं अंकित होती हैं। विशेष तौर पर मनुष्य के पैरों तथा हाथों की उंगलियों पर जो गोल लकीरें होती हैं उन्हें चक्र कहते हैं। पर केवल तू ऐसा है जिसका कोई ऐसा लक्षण दिखाई नहीं देता। इस पंक्ति पर विचार करें। एक आम कहावत प्रचलित है *'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'* अर्थात् प्रारम्भिक लक्षणों से ही किसी व्यक्तित्व या कृतित्व की पहचान होती है। पर हे प्रभु! तेरा तो कोई प्रारंभिक लक्षण भी दिखाई नहीं देता। अत: स्पष्ट है कि तेरा पूर्णतया वर्णन करने में कोई कैसे समर्थ हो सकता है? अक्सर समस्त वस्तुओं का, प्राणियों का कोई न कोई रंग अवश्य होता है। पर हे प्रभु! तेरा तो कोई रंग भी नहीं है जिससे तुझे पहचाना जा सके। सबकी कोई जाति, नस्ल है, पर तू तो इन सबसे परे है। कोई भी यह कहने में समर्थ नहीं कि तेरा स्वरूप कैसा है; तेरा रंग, तेरी रूप-रेखा कैसी है तथा तेरा पहरावा कैसा है।

तेरी हस्ती अटल अर्थात् हमेशा कायम रहने वाली है। 'अनभउ' अर्थात् स्वयं से प्रकाशवान। तू स्वयं के नूर से नूरी हुआ है जैसा कि गुरू नानक देव जी ने मूलमंत्र मे 'सैभं' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४*

Final

है स्वयं से प्रकाशवान।

तुझे किसी ने प्रकट नहीं किया, स्वयं से होंद में है। तेरा बल असीम है, किसी पैमाने से तेरी शक्ति मापी नहीं जा सकती। समस्त जीव यही कहते प्रतीत होते हैं कि तेरी ताकत का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। तू इन्द्रों का इन्द्र तथा करोड़ों बादशाहों का भी बादशाह है अर्थात् तेरा बल सर्वोपरि है। तू तीनों भुवनों का मालिक है अर्थात् आकाश, पाताल तथा मातलोक तेरे ही अधीन हैं। देव, मानव तथा दैंत्य अर्थात् देवता, मनुष्य तथा राक्षस ही क्या समूची वनस्पति भी तुझे 'नेत नेत' अर्थात् अनंत-बेअंत कहती है अर्थात सभी जीव यही कहते प्रतीत होते हैं, तू ऐसा नहीं, तू वैसा भी नहीं अर्थात् संसार में तेरे जैसा कोई है ही नहीं जिससे तेरी तुलना की जा सके। हे प्रभु! तेरी हस्ती को पूर्णतया बयान करने वाला कोई नाम भी नहीं है, केवल एक ही बात समझ में आती है। हे ईश्वर! विद्वानजनों ने तेरे क्रिया-कलापों, तेरे कारनामों को देख कर ही तेरे कुछ नाम रख लिए हैं, लेकिन आज तक कोई भी तेरी पूर्ण हस्ती को स्पष्ट करने वाला तेरा नाम नहीं कह सका।

यहां विचारणीय तथ्य जैसा कि माना जाता है कि शेषनाग की सहस्त्र (हजार) जिहवाएं हैं और ऐसी मान्यता है कि शेषनाग अपनी प्रत्येक जीभ से हर पल ईश्वर के नए नाम का उच्चारण करता है पर आज तक वह भी पूर्णतया तेरी हस्ती को स्पष्ट करने वाला तेरा नाम उच्चारण नहीं कर सका, तो एक जीभ वाला बेचारा प्राणी तेरा क्या वर्णन कर सकेगा? जैसा कि गुरबाणी का फरमान है:

सेखनानि तेरी मरमु न जानां ॥

(पन्ना ६९१)

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं क्रिपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥

हे प्रभु! तुझे मेरी नमस्कार है कि तू अकाल स्वरूप है अर्थात् मृत्यु रहित है। हे ईश्वर! तू रहमत का सागर है अर्थात् दया का घर है। तेरा कोई विशेष रूप नहीं तथा तेरे जैसा और कोई नहीं। तू अनूप है अर्थात् उपमा रहित क्योंकि तेरे जैसा या तेरे जितना और कोई नहीं जिससे तेरी उपमा की जा सके। उसके विलक्षण दयालु रूप को एक तथ्य द्वारा समझने का यत्न किया जा सकता है।

हुआ यूं कि एक बार एक भक्त ने ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे केवल एक दिन के लिए जीवों को रिजक पहुँचाने की आज्ञा दे दो। ईश्वर का जवाब था कि यह duty मैं किसी को नहीं दे सकता। अनेक बार अनुनय-विनय करने पर इस आदेश के साथ कि ठीक है, २४ घण्टों के लिए यह duty तुम्हारी हुई, पर ख्याल रहे, प्रत्येक जीव को हर हाल में रिज़क पहुँचना चाहिए। भक्त की खुशी की सीमा न रही और वह वचन देकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने चल पड़ा। वह चूक गया। उसने एक इन्सान को खूंखार जानवरों से भी बद्तर निकृष्ट कार्य करते देखा और उसे रिज़क नहीं पहुँचाया। जब समय पूरा होने पर ईश्वर ने भक्त से पूछा कि क्या सब कुछ ठीक-ठाक हो गया, सबको रिज़क पहुँच गया तो भक्त का जवाब था कि केवल एक इन्सान जिसे इन्सान कहते हुए भी मुझे शर्म महसूस होती है, उसे छोड़ कर समस्त जीवों को

Final

रिज़क पहुँचाया है। अगर आप भी उसे इस रूप में देखते तो आप भी उसे रिज़क न देते!

भगवान का जवाब था, मैं तो हर पल कितने ही जीवों को अयन्त घिनौने कृत्य करते देखता हूँ, फिर भी उनका रिज़क बंद नहीं करता। तूने अपने कर्त्तव्य का ठीक से पालन नहीं किया।

कहने से अभिप्राय, वह ऐसा कृपालु है कि वह जीवों के कोटिश पापों व दुष्कृत्यों को भी क्षमा कर नजर-अन्दाज कर देता है। वह जीव के अन्तिम श्वास तक भी उससे निराश या हताश नहीं होता। वह ऐसा दयालु है कि वह हमेशा अपनी रचना से परिष्कृत रूप की गुंजाइश देखता है, पर वाह रे कृतघ्न इन्सान! तू उसके एक उपकार को भी नहीं मानता। श्री गुरू गोबिंद सिंघ पातशाह जी *'नमसत्वं क्रिपाले'* उस परमात्मा के दयालु स्वरूप को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए बार-बार उस परवरदिगार को नमन करते हैं।

नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए ॥ नमसतं अजाए ॥३॥

हे वाहिगुरू! तुझे इसलिए भी नमस्कार है कि तू अभेख अर्थात् वेशरहित है, तेरा कोई पहरावा नहीं। तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। तू अलेख है। तेरा कोई चित्र नहीं बनाया जा सकता। सांसारिक जीवों के शरीरों की भांति तेरा कोई शरीर नहीं। तू कायारहित है क्योंकि तू जीवों की तरह स्त्री की कोख से पैदा नहीं हुआ। जैसा कि 'आसा की वार' में श्री गुरू नानक देव जी ने भी इसी तथ्य को स्पष्ट किया है:

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

(पन्ना ४७३)

समस्त जीव यहां तक कि स्त्री को जन्म देने वाली भी स्त्री ही है। केवल एक परमात्मा ही है जो गर्भ में नहीं आता अर्थात् तुझे स्त्री ने पैदा नहीं किया तू स्वयं से ही प्रकाशवान है। तेरे ऐसे स्वरूप को नमन।

क्रमशः

(कविता)

अमृत-वंदन

*-पं. आर्य प्रसाद गिरि**

गुरू नानक जी से गुरू गोबिंद सिंघ, दसों गुरदेव हमारे।
कायाकल्प करके मध्य युग की, सभी लोग उद्धारे।
गुरुओं की ज्योति से ही तो, हैं सगरे सुख सारे।
जो न चले गुरू ग्रंथ साहिब पे, तिन्हि के अघ से जग होत दुखारे।
अमृत वेले गुरुद्वारे, अमृत बाणी बांटे अमृत।
वीर वैरागी से सिख-सुसंत के, पंथ चलंत लभंत मुदित।
सति श्री अकाल से होत निहाल, भूपाल भी खालसा से हो सुखित।
'गुरू ग्रंथ साहिब' पे आ, द्वेष-दंभ मिटा, तभी 'आर्यगिरि' सभी हो हर्षित।

**मठारी, निंगेश्वर मठ, निंगाधाम, आसनसोल (प. बं.)- ७१३३७०*

Final

गुरू-उपमा : १२

भाई गुरदास जी की चौथी वार

*-प्रो बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

मंगल पउड़ी: नम्रता मनुष्य द्वारा धारण किया जाने वाला गुण है। बहुविकारी केवल मनुष्य ही होता है। मनुष्य जन्म दुर्लभ है। अलग-अलग जूनों और अनगिणत श्रेणियों के चक्करों के बाद यह देह मिलती है। इसलिए मंगल की पउड़ी में इस जन्म को फलीभूत कैसे करना है, की समस्या के बारे में चर्चा करते हुए बताया गया है कि निरंकार ने अपने ओंकार स्वरूप को आकार में लाकर हवा, पानी, अग्नि, धरती, आकाश आदि पांच तत्व बनाए और फिर धरती और आकाश के नीचे और ऊपर को बिछोड़ चांद, सूरज बना दिए। उपरांत खानियां (अंडज, जेरज, सेतज, उतभुज) के द्वारा लाखों-करोड़ों योनियों के शरीर बना दिए। लेकिन इनमें मनुष्य जन्म दुर्लभ है, उत्तम है। लेकिन यह उत्तमता तभी बनी रह सकती है, यदि वह सतिगुरू की शरण में लगे, सतिसंगत में जाकर शब्द में ध्यान लगाए, चित्त जोड़े, प्रेम-भाव के साथ गुरू-शब्द की विचार कर उसकी कमाई द्वारा परोपकारी सतिगुरू के साथ प्यार करे और स्वयं भी उपकारी जीवन बनाए:

ओअंकारि अकारु करि पउणु पाणी बैसंतरु धारे।
धरति अकास विछोड़िअनु चंदु सूरु दे जोति सवारे।
खाणी चारि बंधान करि लख चउरासीह जूनि दुआरे।
इकस इकस जूर विचि जीअ जंतु अणगणत अपारे।
माणस जनमु दुलंभु है सफल जनमु गुर सरणि उधारे।
साधसंगति गुर सबदि लिव भाइ भगति गुर गिआन वीचारे।
परउपकारी गुरू पिआरे ॥१॥

परोपकारी जीवन बनाने के लिए नम्रता आवश्यक है। अगली पउड़ियों में नम्रता के अलग-अलग दृष्टांत देकर व्याख्या को आगे बढ़ाया है। दिये गए दृष्टांतों में धरती, पांव, छोटी वस्तुएं जैसे अनामिका (सबसे छोटी उंगली), सवांती बूंद, जल, मजीठ रंग, चींटी, घास, तिल, कपास का बीज, अनारदाना, सोना, खसखस का दाना, गन्ना, हीरा, बाल, गुलर वृक्ष, दूज का चांद, ध्रू भक्त आदि हैं। इन दृष्टांतों के द्वारा (मनमुख और गुरमुख) बिरतियों अथवा वृत्तियों का वर्णन भी किया गया है और यह भी बताया गया है कि गुरू-प्यारे गुरमुखों में भी इस तरह नम्रता बनी रहती है। इन दृष्टांतों की तरह गुरमुख का जीवन भी आपा गंवा कर परोपकार करने वाला होता है।

भाई गुरदास जी की चौथी वार की दूसरी पउड़ी में नम्रता की विशेषता के बारे

**रीसर्च स्कालर, सिख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

में चर्चा करते हुए इसको 'धरती' के साथ तशबीह (तुलना) दी गई है। यह दृष्टांत अन-युक्ति अलंकार है। धरती के नम्र गुणों के बारे में बताते हुए भाई गुरदास जी लिखते हैं कि सबसे नीचे धरती है जो अपना आप गंवा कर भी नम्र बनी रहती है। धैर्य और संतोष के धर्म में सदा दृढ़ रह कर पैरों की चरण-छोह प्राप्त कर यही धरती जिसका कोई मूल्य नहीं पड़ता, अमूल्य हो जाती है वर्षा की अमृत-बूंदों की एकरस वर्षा के साथ तृप्त हो जाती है। निरंकार के भेजे अमृत के साथ तृप्त हो इस निमाणी सम्मान मिलता है कि जो कुछ भी इसमें बोया जाता है वही फलता है। यही स्थिति गुरमुखों की होती है। धरती की तरह ही सुखों के फल मसकीनता (गरीबी) में समझते हैं अर्थात सदा नम्रता में रहते हैं:

सभदूं नीवी धरति है आपु गवाइ होई ओडीणी।
धीरजु धरमु संतोखु द्रिड़ु पैरा हेठि रहै लिव लीणी।
साध जनां दे चरण छुहि आढीणी होई लाखीणी।
अंम्रित बूंद सुहावणी छहबर छलक रेणु होइ रीणी।
मिलिआ माणु निमाणीऐ पिरम पिआला पीइ पतीणी।
जो बीजै सोई लुणै सभ रस कस बहुरंग रंगीणी।
गुरमुखि सुख फलु है मसकीणी ॥

धरती सब अच्छे और बुरे का भार सहन करती है। सबके लिए उपजीविका पैदा करती है। अंत समय आपे में ही समा लेती है। इन नम्र गुणों के कारण ही गुरबाणी में धरती को 'माता धरति महत' कह कर सम्मान दिया गया है।

इससे आगे वाली पडड़ी में नम्रता के लिए 'पैरों' कई दृष्टांत देकर भाई गुरदास जी बताते हैं कि मनुष्य के अंगों में जिहवा, आंखों, नाक, कान आदि सब ऊँची जगह पर हैं। लेकिन ये सारे रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द आदि विषयों के अधीन हैं। ये सब बुरी संगत की तदबीरें बताने वाले हैं। 'जिहवा' रसी के अच्छे-बुरे स्वादों और निंदा मीठे-कौड़े बोलों, चुगली के लिए उलझी रहती है। 'नाक' हमेशा सुगंधी को लोचा करता है। 'कान' निंदा, चुगली और अच्छे-बुरे सुनने में उत्सुक रहते हैं। 'आंखें' हमेशा पर-रूप देखने की ताक में रहती हैं। दूसरी ओर 'पांव' सबसे नीचे रहते हैं। ये नीचे होते हुए भी ऊंचे हैं। ये शरीर के कई काम संवारते हैं। मनुष्य इनके द्वारा चल कर सतिसंगत में जाता है जहां उसकी हउमै दूर होती है। फिर पांव पर माथा टेका जाता है। इस तरह भाई गुरदास जी सार-पंक्ति में बताते है कि गुरसिख के लिए वे बड़ी शिक्षा हैं कि वह पांवों की तरह निव कर मुर्दा-भाव (नम्रता) धारण करे, फिर मुरीदी अथवा गुरसिखी की प्राप्ति हो जाती है:

माणस देह सुखेह है तिसु विचि जीभै लई नकीबी।
अखी देखनि रूप रंग राग नाद कंन करनि रकीनी।
नकि सुवासु निवासु है पंजे दूत बुरी तर तीबी।

Final

सब दूं नीवें चरण होइ आपु गवाइ नसीबु नसीबी।
हउमै रोगु मिटाइदा सतिगुर पूरा करै तबीबी।
पैरी पै रहरासि करि गुर सिख सुणि गुरसिक मनीबी।
मुरदा होइ मुरीदु गरीबी ॥३॥

चौथी पउड़ी में छोटी-छोटी वस्तुएं जो बड़े-बड़े गुणों की मालिक होती हैं, उनके बारे में व्याख्या की गई है। इन छोटी परंतु गुणों के कारण ऊंची होने वाली वस्तुओं में चीची, उंगली, सवाति बूंद, केसर, पारस टुकड़ी, मणि, रसायन आदि को 'नम्रता' के दृष्टांत के तौर पर लिया गया है। भाई गुरदास जी लिखते हैं कि जैसे चीची को अंगूठी पाने का सम्मान मिलता है। छोटी सी सवाति बूंद सिप्पी में पड़कर सुच्चा मोती बन जाती है। छोटी सी केसर-बूंद माथे पर टीका बनकर शोभा पाती है। पारस की छोटी सी टुकड़ी आठ धातों को सोना बना देती है। सांप के सिर की छोटी सी मणि को लोग छुप-छुप देखते हैं। पारे की रसायन तैयार कर छोटी सी रत्ती अमूल्य हो जाती है। इसी तरह मनुष्य को भी छोटी सी वस्तुओं से प्रेरणा लेकर नम्रता धारण करनी चाहिए:

लहुड़ी होइ ची चुंगली पैधी छापि मिली वडिआई।
लहुड़ी घनहर बूंद हुइ परगट मोती सिप समाई।
लहुड़ी पारस पथरी असट धातु कंचनु करवाई।
जिउ मणि लहुड़े सप सिरि देखै लुकि लुकि लोक लुकाई।
जाणि रसाइणु पारिअहु रती मुलि न जाइ मुलाई।
आपु गवाइ न आपु गणई ॥४॥

पांचवीं पउड़ी में आग और जल (पानी) के दृष्टांत के साथ गुणों और अवगुणों के बारे में बताया है, जो अपने गर्म स्वभाव के कारण तमोगुणी है। आग धुआं करती है जो कालख बन जाता है। आग के प्रेम कारण पतंगा जल मरता है। आग की लाट ऊंची है जो अहंकार की प्रतीक है। सबको जलाकर राख कर देती है। दूसरी ओर जल (पानी) का स्वभाव ठंडा है कालख को दूर करता है, ऊंची ओर जाने की बजाए हमेशा नीचे की ओर जाता है, जलाने की जगह हरियावल लाता है। उसका स्वभाव परोपकारी है। दूसरे शब्दों में अहंकारी मनुष्य आग की तरह लोगों के दिल जलाते हैं। दूसरी ओर पानी के स्वभाव जैसे गुरमुख नम्रता के धारणी होते हैं। भाई गुरदास जी बताते हैं कि जो पानी की तरह नीचे की ओर चलता है वो ही गुरू को प्यारा लगता है:

अगि तती जलु सीअरा कितु अवगुणि कितु गुण वीचारा।
अगी धूआ धउलहरु जलु निरमल गुर गिआन सुचारा।
कुल दीपकु बैसंतरहु जल कुल कवलु वडे परवारा।
दीपक हेतु पतंग दा कवल भवर परगटु पाहारा।
अगी लाट उचाट है सिरु उचा करि करै कुचारा।
सिरु नीवा नीवणि वासु पाणी अंदरि परउपकारा।
निव चलै सो गुरू पिआरा ॥५॥

क्रमश:

Final

विस्मादी वृत्तांत-८

सिरु दीजै काणि न कीजै

*-डॉ. अमृत कौर**

सरहिंद के ठंडे बुर्ज में कैद हैं माता गुजरी जी। दिसंबर की कड़कती सर्दी का महीना। तन पर केवल तीन कपड़े। सरहिंद के नवाब वजीर खां ने गोबिंद सिंघ के नन्हें-नन्हें लालों को अपने दरबार में बुलाया है। साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबज़ादा फतेह सिंघ- आयु पांच और सात वर्ष। नन्हें-नन्हें फूल से बालक। माता जी की आखें अपने पति श्री गुरू तेग बहादर जी के चरणों में अरदास में जुड़ गईं, 'हे गुरदेव! मेरे स्वामी, मेरे नाथ! अपने इन लालों की रक्षा करना। कितनी कठिनाइयों से पाला है मैंने इन कलेजे के टुकड़ों को! मेरे गोबिंद सिंघ के ये लाल मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं। इन्हें बल देना, शक्ति देना कि ये सत्य के मार्ग से विचलित न हों। धर्म की रक्षा के लिए इन्हें शक्ति देना! ये डगमगाएं नहीं! हे वाहिगुरू! मेरे लालों की रक्षा करना।' और माता गुजरी जी की अन्तरात्मा प्रभु के चरणों में अरदास में जुड़ गई।

माता गुजरी जी ध्यान-मग्न हो गए। एक-एक करके सभी दृश्य उनके सामने चित्रवत् मंडराने लगे। वे अकाल पुरख से बार-बार प्रार्थना कर रही हैं साहिबजादों की रक्षा के लिए। वे दादी मां माता गुजरी जी, जिन्होंने हंसते-हंसते अपने प्रियतम को शरण में आए कश्मीरी ब्राह्मणों के धर्म की रक्षा के लिए बलिदान देने के लिए भेज दिया था, उस समय नन्हें बाल गोबिंद राय केवल नौ वर्ष के थे और उनके लालन-पालन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उन पर आ पड़ा था। पर उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। भक्ति और शक्ति की साकार प्रतिमा श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी आज अपने पिता के आदर्शों पर चलकर निष्प्राण भारतीय जनता में नवीन प्राणों का संचार कर रहे थे। स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। माता गुजरी जी प्रसन्न थे कि वे अपना उत्तरदायित्व सफलता से निभा पाई थीं। प्रभु की अपार कृपा से गुरू गोबिंद सिंघ जी के घर बारी-बारी से चार लालों ने जन्म लिया। उन्हें दादी मां बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके हर्ष का पारावार न था। प्राणों से भी प्यारे इन नन्हें बालकों की किलकारियों से घर गूंजने लगा।

पर गुरू गोबिंद सिंघ जी का जीवन तो फूलों की सेज न था। वे तो दुष्टों के दमन के लिए आये हैं। तीन साल हो गए थे आनंदपुर के किले का मुगलों द्वारा घेरा डाले। गुरू गोबिंद सिंघ जी तो किला छोड़ने के लिए तैयार न थे परंतु सिख लड़ते-लड़ते तंग आ चुके थे, दाने-दाने को मोहताज। बाहर से तो अन्न का एक दाना भी न आने दिया जाता था। मुगलों द्वारा गाय और कुरान की कसमें खाने पर गुरू जी ने आनंदपुर का किला छोड़

*१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३

Final

दिया। परन्तु गुरू जी और उनके सिख अभी सरसा नदी के किनारे ही पहुंचे थे कि मुगल सिपाही सभी कौल-इकरार और कसमें भूल गए तथा उन्होंने श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी और उनके सिखों पर आक्रमण कर दिया। दुश्मनों के इस अकस्मात आक्रमण से परिवार के सभी सदस्य अलग-अलग हो गए। इस गड़बड़ी में दादी मां माता गुजरी जी और नन्हें बालक साहिबजादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबजादा फतेह सिंघ गंगू ब्राह्मण के हाथों में पड़ गए। गंगू ब्राह्मण गुरू-घर से निकाला हुआ रसोइया था। वह मीठी-मीठी बातें कर और सेवा का आश्वासन देकर उन्हें अपने साथ ले आया।

परन्तु गंगू ब्राह्मण नमक-हराम निकला। इनाम के लालच में उसने मुरिंडा के मुसलमान अफसर को सूचना देकर बच्चों को पकड़वा दिया और आज बच्चे सरहिंद के नवाब वज़ीर खां के सामने पेश होने के लिए गए हैं।

दादी मां माता गुजरी जी बच्चों के आने का बेसबरी से इन्तज़ार कर रही हैं। उनकी आंखें द्वार पर टिकी हैं। इतने में कदमों की आहट हुई और साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबज़ादा फतेह सिंघ आकर दादी मां से लिपट गए। दादी मां ने उन्हें बाहों में लेकर प्यार किया, माथा चूमा और कहा, 'युग-युग जीओ मेरे लाल! गर्म लू का झोंका भी तुम्हें न लगे! हां, सुनाओ! वज़ीर खां ने तुससे क्या कहा?'

'जब हम दरबार में पहुंचे तो मुरिंडे के रंगड़ ने हमसे कहा कि हम सिर झुका कर वज़ीर खां को सलाम करें। दादी मां, पता है तब हमने क्या कहा?'

'क्या कहा मेरे लाल?'

'हमने कहा कि यह सिर तो हमने धर्म व देश-कौम की सेवा के लिए अर्पित कर दिया है। हम श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी शेर-पिता के बेटे हैं। यह सिर तो केवल अकाल पुरख के सामने झुकता है, दुनिया के किसी बड़े नवाब के सामने नहीं।'

'शाबाश, मेरे लाल!'

'देखो न दादी मां, ये नवाब कितने झूठे हैं! हमसे कहा गया कि हमारे पिता हमारे बड़े भाइयों सहित चमकौर के युद्ध में शहीद हो गए हैं।'

'यह सब तो उन्होंने तुम्हें डराने के लिए कहा।'

साहिबज़ादा ज़ोरवर सिंघ बोला, 'पर हम भी कहां डरने वाले हैं? मैंने कहा, हमारे पिता तो एक महान वीर पुरुष हैं। उनका एक सिख सवा लाख से लड़ सकता है। इस दुनिया में कौन जन्मा है उन्हें मारने वाला?'

'इस पर दरबारी एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। किसी ने कह दिया, बच्चा है कि अंगार? इस पर सुच्चानन्द बोल पड़ा, ये बच्चे नहीं सांप हैं- सिर से पैर तक ज़हर से भरे हुए। एक गुरू गोबिंद सिंघ वश में नहीं आ रहा। ऊपर से ये बड़े हो गए तो इन्हें काबू करना कठिन हो जाएगा। सांप को तो पैदा होते ही मार देना उचित है।'

माता गुजरी जी इन बातों को सुनकर कांप उठीं। उन्हें लगने लगा, अब इन बच्चों के भी शहीद होने का समय आ गया है।

Final

उन्होंने कलेजा कड़ा करके पूछा, 'अच्छा बेटा! यह बताओ, इन बातों को सुनकर तुम्हें डर तो नहीं लगा?'

'वाह दादी मां! तुम भी कमाल करती हो! हम गुरू तेग बहादर जी के पोते और गुरू गोबिंद सिंघ जी के बेटे भला डरने वाले हैं और मां! तुमने तो हमें सदैव यह शिक्षा दी है-*भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥* फिर भला डर कैसा?'

'शाबाश, बेटे शाबाश! मुझे विश्वास है कि तुम किसी भी स्थिति का सामना वीरता से करोगे। हां, तो इसके बाद क्या हुआ? क्या किसी ने सुच्चानंद की बात का समर्थन किया?'

'दादी मां! सुच्चानंद की बात का समर्थन किसी ने नहीं किया। फिर वजीर खां ने मलेरकोटले के नवाब से कहा, 'आपका भाई और भतीजा भी तो गुरू के हाथों चमकौर के युद्ध में मारे गए हैं। अब बदला लेने का अच्छा अवसर है। इन बच्चों को मैं आपके हवाले करता हूं। इन्हें मार कर अपने भाई-भतीजे का बदला ले सकते हो।'

'फिर मलेरकोटला के नवाब ने क्या कहा?'

'मलेरकोटला के नवाब तो शेरदिल पठान हैं। जानती हो दादी मां, उसने क्या कहा? उसने कहा कि इन बच्चों का क्या दोष? यदि बदला लेना ही है तो इनके बाप से लेना चाहिए। मेरा भाई और भतीजा गुरू गोबिंद सिंघ के साथ लड़ाई लड़ते हुए मारे गए हैं, कत्ल नहीं किए गए। इन बच्चों को मारना मैं बुज़दिली समझता हूं। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि इन बेकसूर बच्चों को छोड़ दो। हमारा कुरान शरीफ भी मासूम बच्चों के कत्ल की आज्ञा नहीं देता।'

माता गुजरी जी ने अपने लालों को गले से लगा लिया। प्यार करते हुए बोली, 'क्या नवाब की इस बात का कोई प्रभाव वज़ीर खां पर पड़ा?'

'नहीं मां, नहीं। प्रभाव तो इंसानों पर पड़ता है, सत्ता के लालची हैवानों पर नहीं। इसके बाद हमें अनेक लालच दिए गए कि हम उनकी बात मान कर अपना धर्म छोड़ दें। हमको कहते, इस्लाम कबूल कर लो दौलत के अंबार तुम्हारे कदमों में लग जाएंगे, जन्नत के द्वार तुम्हारे लिए खुल जाएंगे, परियों जैसी शहजादियों से तुम्हारे ब्याह किए जाएंगे। पर जब हम टस से मस न हुए तो नवाब धमकियों पर उतर आया कि यदि तुमने मेरा कहना न माना तो मैं तुम्हें कत्ल करवा दूंगा, जिन्दा दीवारों में चिनवा दूंगा। बोलो, क्या मन्जूर है? मौत या इस्लाम? और दादी मां हमें एक दिन की मोहलत दी गई है कि हम सोच-विचार कर लें, क्योंकि हम बच्चे जो ठहरे। और यदि हम इस्लाम कबूल नहीं करते तो कल वह हमें जिन्दा दीवार में चिनवा देगा।'

बच्चों की ये बातें सुन दादी मां का दिल दुखी होना स्वाभाविक था। दादी मां रात भर नन्हें मासूम फूलों को छाती से लगाए रही, प्यार करती रही। बच्चे प्रगाढ़ निद्रा में सो रहे हैं दादी मां के आंचल का सुखद सहारा पाकर। परन्तु मां को चैन कहां? रह-रह कर उनके

शरीर में सिहरन पैदा हो जाती है। 'कल मेरे लाल शहीद कर दिए जाएंगे। ये भोली-भाली सूरत वाले नन्हें से फूल धूल में मिल जाएंगे। नहीं-नहीं, ये तो सदा के लिए अमर हो जाएंगे। यह ठीक है कि ये नन्हें फूल मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं, पर अब कोई और रास्ता भी तो नहीं है। मेरा प्यारा गोबिंद सिंघ पता नहीं अब कहां होगा? उसे तो पता भी न होगा कि कल उसके कलेजे के टुकड़े इस दुनिया में नहीं रहेंगे। हे मेरे सरताज! अब तो तुम्हीं अपनी दैवी प्रेरणा द्वारा इन बच्चों का मार्ग प्रशस्त करना ताकि इनके कदम न डगमगाएं!'

इसी उधेड़बुन में सवेरा हो गया—ऐसा सवेरा जो दादी मां के लिए घने अंधेरे का संदेश लेकर आया। वज़ीर खां के आदमी बच्चों को लेने आ पहुंचे। मां ने अपने कलेजे के टुकड़ों को गले लगाया, माथा चूमा और आशीर्वाद देते हुए कहा, 'मेरे लाल! जैसे तुम्हारे दादा गुरू तेग बहादर जी ने दिल्ली के चांदनी चौंक में शीश देकर शहीदी पाई थी पर धर्म नहीं छोड़ा था, तुमने भी धर्म न छोड़ना! तुम उस गुरू अरजन देव जी के वंशज हो जिन्हें लगातार तीन दिन गर्म तवे पर बैठाया गया, गर्म-गर्म रेत ऊपर डाली गई, नीचे आग जल रही थी और ऊपर से गर्मी की ज्वाला बरस रही थी, पर उनके होंठों पर था: *तेरा कीआ मीठा लागै॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥* तुम गुरू गोबिंद सिंघ के शेर-बच्चे हो। हंसते-हंसते अपने धर्म के लिए कुर्बान हो जाना पर अपने पिता, दादा और पड़दादा के नाम पर आंच मत आने देना।'

बच्चों ने दादी मां का आशीर्वाद लिया और चल पड़े वजीर खां के दरबार की ओर। शेर के बच्चे शेर की चाल चल रहे थे, वीरता और निडरता की साकार मूर्ति। चेहरे पर भय और आतंक का नामो-निशान न था। ऐसा तेज था उनके चेहरे पर जिसे देखकर सूर्य भी शर्मा जाए।

कल वाली बात फिर दोहराई गई- 'मौत या इस्लाम?' बच्चों के इन्कार करने पर दीवार बननी शुरू हुई। यह खबर आग की तरह फैल गई कि गुरू गोबिंद सिंघ जी के नन्हें बच्चों को दीवार में चिनवाया जा रहा है। जनता इस हृदय-विदारक दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़ी। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। दीवार बननी शुरू हुई। बच्चों को बीच में खड़ा कर दिया गया। एक-एक ईंट रखी जा रही थी। चारों ओर सन्नाटा, भय और आतंक। देखने वाले चुपचाप अश्रु बहा रहे थे। पर किसी में इतना साहस न था कि इस अन्याय व अत्याचार का विरोध करता या आवाज़ उठाता। बच्चों के मुख पर थी एक दैवी मुस्कान और शान्ति। उनके भोले-भाले मुखड़े एक दैवी आभा से चमक रहे थे। उनके नेत्र प्रभु-सुमिरन में मूंदे हुए थे। इस मर्मभेदी व रौंगटे खड़े करने वाले दृश्य की चुपचाप को तोड़ते हुए वजीर खां ने एक बार फिर बच्चों से कहा, 'क्यों बेमौत मरते हो? अभी तो तुम्हारे खेलने-खाने के दिन हैं। तुम्हें दीन-धर्म की बातों से क्या लेना-देना? अब भी समय है। अगर इस्लाम कबूल कर लो तो तुम्हें अभी बरी कर दिया जाएगा। दुनिया भर के ऐश्वर्य-आराम

Final

तुम्हारे कदमों पर न्योछावर कर दिए जाएंगे।'

वज़ीर खां की इस बात को सुन साहिबजादा जोरावर सिंघ ने निडरता से कहा, 'सुन रे सूबेदार! हम किसी सूरत में भी अपना धर्म नहीं छोड़ेंगे। तू हमें दुनिया का क्या लालच देता है? हम तेरे चकमे में आने वाले नहीं हैं। हमारे दादा जी को शहीद कर मुगलों ने एक अग्नि प्रज्वलित की है। हमारी शहीदी इस अग्नि को हवा देकर दावाग्नि बना देगी जिसमें तुम और तुम्हारा मुगल साम्राज्य भस्म हो जाएगा।'

साहिबजादा फतेह सिंघ ने जोश में आकर कहा, 'हम गुरू गोबिंद सिंघ जी के पुत्र हैं! हम अपने खानदान के नाम पर बट्टा नहीं लगने देंगे। हमारे खानदान की रीति है- *सिर जावे तां जावे पर सिखी सिदक न जावे!* एक दिन मरना तो सभी ने है। हमने खंडे का अमृत छका है। हमें मृत्यु से क्या भय? हमारी शहीदी मुगल साम्राज्य की जड़ें हिला देगी!'

बच्चों की इन निधड़क बातों ने जलती पर घी का काम किया। नवाब इन शेर बच्चों का साहस और सहन न कर सका। उसने शाशल बेग और बाशल बेग जल्लादों के नापाक हाथों से दोनों साहिबज़ादों रूपी फूलों को मसल दिया। दानवता अपनी विजय पर हंस पड़ी। क्रूरता ने सीमा पार की। ■

भट्ट भिक्खा जी : जीवन और बाणी

(पृष्ठ २८ का शेष)

१६. देखो पैर-टिप्पणी १४.

१७. 'नानू बेटा मूले का . . . मथरा बेटा भिक्खे का . . . साल सोलह सौ अठत्तर, कत्तक प्रविष्टे तीजे के दिंहु ग्राम रूहीला परगना बटाला के मलान . . . रण जूझते गुरू के जोध, शासे माथे रण में जूझ कर मरे।' भट्ट बही मुलतानी सिंधी, खाता बंझरउतो का, उद्धरित खालसा खंडेधार (मासिक), अमृतसर, अगस्त-२००४, पृष्ठ-१२

१८. पूर्व अंकित, अध्याय-१४ बंद ८६-१०२, पृष्ठ-४९८

१९. 'साल सोलह सौ इक्यानवे वैसाख प्रविशटे सतारह', भट्ट वही मुलतानी सिंधी, उद्धरित, डॉ. हरजिंदर सिंघ दिलगीर, गुरू के शेर, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, अमृतसर, जून-२००१, पृष्ठ-३४.

२०. नरबद सिंघ-पूर्ण सिंघ-मुकंद सिंघ-चूहड़ सिंघ-सरूप सिंघ और सेवा सिंघ; देखो: पग टिप्पणी १४.

२१. सरूप सिंघ कौशिश, गुरू कीआं साखीआं, (संपा.) ज्ञानी गरजा सिंघ, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, मई-१९९५ (तीसरी बार); सेवा सिंघ भट्ट, शहीद बिलास-भाई मनी सिंघ, पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना, दिसम्बर-१९६१; नोट: गुरू कीआं साखीआं का अंग्रेजी अनुवाद भी हो चुका है; देखो: Guru Kian Saakhian (Tales of the Sikh Gurus, English tra.), Pritpal Singh Bindra, Singh Brothers, Amritsar, March-2005.

२२. पूर्व अंकित, पग टिप्पणी १३, पृष्ठ-१२.

२३. भट्ट कीरत, सल्, गयंद आदि भी चौथे पातशाह तक ही बाणी उच्चारण करते हैं।

२४. देखो: सिक्खां दी भगतमाल, पूर्व अंकित, साखी-६०, पृष्ठ-९५; महिमा प्रकाश (भाग-२), (संपा.) डॉ. उत्तम सिंघ, भाषा विभाग, पटियाला-१९९९ (तीसरी बार), साखीआं पातशाही-३, साखी-६, बंद-६८:१-२, पृष्ठ-१७३ आदि।

२५. हरि जी सोढी, गोसटि गुरू मिहरवान, (संपा.) डॉ. गोबिंद नाथ राजगुरू, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़-१९७४, पृष्ठ-३४३.

२६. देखो: पग-टिप्पणी १२

२७. पृष्ठ १३९५-९३९६. ■

Final

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-२

'गुरु शोभा' के रचयिता-कवि सेनापति

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

सिख इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय स्थान रखने वाले काव्य-ग्रंथ 'गुरु शोभा' के रचयिता कवि सेनापति के प्रारंभिक जीवन से संबंधित कोई स्रोत उपलब्ध नहीं है। इतिहास में आपके बारे में जिक्र तब से मिलना आरंभ होता है जब से आप ने दशम पिता श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के दरबार में दरबारी कवि के रूप में प्रवेश किया। आनंदपुर साहिब आने से पूर्व आप कहां रहते थे, क्या करते थे, कुछ भी ज्ञात नहीं। यही कारण है कि कवि सेनापति के जन्म, जन्म-वर्ष, जन्म-स्थान आदि के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी की साहित्यिक अभिरुचियों, साहित्य तथा साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने की नीति से आकर्षित होकर सेनापति गुरू-दरबार में उपस्थित हुए। गुरू जी ने विद्वान् कवि को दरबारी कवि का सम्मान प्रदान किया। श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के जीवन-काल (१६६६-१७०८ ई) को दृष्टि में रखने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि सेनापति का काल सन् १६५०-६० से लेकर १७१०-१५ तक रहा होगा।

कवि सेनापति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति 'गुरु शोभा' है जिसने कविराय को सदैव के लिए अमर कर दिया। इसके अतिरिक्त एक और प्रचलित दोहे से ज्ञात होता है कि आप ने 'चाणक्य नीति' का भी संस्कृत से भाखा में अनुवाद किया था-

गुरु गोबिंद की सभा में लेखक परम सुजान।
चाणाके भाषा करी कवि सेनापति नाम।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कवि सेनापति संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे।

कवि सेनापति कृत 'गुरु शोभा' ग्रंथ सिख-सिद्धांतों एवं सिख इतिहास को प्रस्तुत करने वाला प्रमुख ग्रंथ है। इस ग्रंथ में सिख मान्यताओं, मर्यादाओं और परम्पराओं का सहज-सरल वर्णन किया गया है। अमृत-प्रचार, खालसा पंथ की सृजना, दशमेश पिता द्वारा लड़े गये युद्ध और गुरू जी के अंत समय का वर्णन इस ग्रंथ के मुख्य वर्ण्य-विषय हैं। श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के अवतार-धारण के विषय में कवि कहता है-

तिंग बखशीश करी करतारै।
प्रभु वाक्य इम कीओ उचारे।
तुम मेरा इक पंथ चलाओ।
सुमति देइ लोगन समझाओ।

इस प्रकार दशम पिता ने अवतार धारण किया और समस्त अन्याय मिटाने हेतु खालसे की सृजना की:

कियो प्रगट तब खालसा चुकयो सकल जंजाल।

कवि सेनापति ने 'गुरु शोभा' में साहिबजादों के अमृत छकने और अमृत-प्रचार करने का भी जिक्र किया है। यह ऐसा तथ्य है जो अन्य किसी ग्रंथ में नहीं मिलता, जैसे कि:

दे खंडे की पाहुल तेज बढाया।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना।*

Final

सिंघ अजीत हुकम बरताया।

'गुरु शोभा' में श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गये युद्धों का भी सजीव चित्रण मिलता है। दशम पिता के विरुद्ध जुड़ी फौज के बारे में कवि सेनापति कहते हैं:

गुज्जर रंघड़ बहुत अपार।
बडे बडे जोधा असवार।
सीरंद वाले है हमराही।
गढ़ लाहौर ते फौज मंगाई।

युद्ध की विभीषिका का वर्णन करते हुए कवि सेनापति कहते हैं कि जब चार सिंघ पानी लेने जाते थे तो दो पानी भरते थे और दो उनकी रक्षा के लिए शत्रुओं से जूझ रहे होते थे:

चार सिंघ पाणी को जावैं।
दो जूझैं दो पाणी लिआवैं।

चमकौर की जंग के बारे में कवि सेनापति ने चालीस भूखे-थके सिखों और दूसरी ओर दस लाख की फौज का भी विशेष जिक्र किया है:

कहा वीर चाली हुदावंत भारे।
कहा एक नौ लाख आए हकारे।

एक स्थान पर साहिबजादा अजीत सिंघ के जौहर का वर्णन करते हुए शत्रुओं में मची खलबली को यूं दर्शाया है:

लेत परोइ पठान को, सभ हन सांग दिखलाए।
देखत ही सभ करत है, अरे खुदाय खुदाय।

इस प्रकार पंजाबी प्रभावित ब्रज भाषा में रचा गया यह ग्रंथ 'गुरु शोभा' सिख धर्म एवं सिख इतिहास से संबंधित बड़ी प्रमाणिक जानकारी प्रदान करता है और अपने सृजक कवि सेनपति की ऊंची विद्वता को साबित करता है। ■

(कविता)

गुरबाणी क्या है, धर्म क्या है ?

*-स. सुरजीत सिंघ**

आओ मिलकर सीखें, गुरबाणी क्या है, धर्म क्या है ?
किस वस्तु को अपनाना है, क्या तजना है, क्या रखना है ?
जो गीत प्रेम के गाता है, वही जोड़े सबसे नाता है।
जो मेलजोल सिखलाता है, वही प्रवेश प्रभु-दर पाता है।
जो सबसे प्यार बढ़ाता है, वही परायों को अपनाता है।
जो अहंकार मिटाता है, इंसान नेक बन जाता है।
जो घावों को भर जाता है, वही हर पीड़ा हर पाता है।
जो कष्टों में साथ निभाता है, वही सत्य की राह दिखाता है।
'सरबत्त का भला' जो चाहता है, वही गुरबाणी है, वही धर्म है।

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)

Final



श्री हजूर साहिब तक बनेगा श्री गुरू गोबिंद सिंघ मार्ग

पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल ने कहा है कि दशम गुरू श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी से संबंधित आनंदपुर साहिब (रोपड़) से तलवंडी साबो (बठिंडा) तक बने 'श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी मार्ग' को महाराष्ट्र में स्थित श्री हजूर साहिब (नांदेड़) तक मुकम्मल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि श्री हजूर साहिब में बनाए जा रहे पंजाबी भवन का खर्च भी राज्य सरकार उठाएगी। यह भवन श्री हजूर साहिब में जाने वाले श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए बनाया जा रहा है। इस संबंधी राज्य के लोक निर्माण विभाग के सचिव की डयूटी निर्धारित कर दी गई है और वे इस रूट का सर्वे कर रिकार्ड इकट्ठा करेंगे। इसमें इतिहासकारों की मदद भी ली जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार इस मार्ग को मुकम्मल करने के लिए केंद्र व संबंधित राज्य सरकारों से मदद की गुजारिश करेगी।

दस्तार पर पाबंदी के खिलाफ शांतिमय ढंग से करें संघर्ष-जत्थेदार

अमृतसर: श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ ने सिखों से फ्रांस सरकार द्वारा दस्तार पर लगाई गई पाबंदी के विरुद्ध शांतिमय ढंग से संघर्ष करने का आह्वान किया है। सिख विद्वान स. एम. एस. राही द्वारा लिखित पुस्तक 'रिमूवल आफ टरबन इन फ्रांस' के विमोचन के बाद जत्थेदार जी ने कहा कि सिख रहत मर्यादा के अनुसार गुरू पंथ की दस्तार सिखी के पहरावे का अभिन्न अंग है। सिखों के लिए स्वाभिमान, सिखी की पहचान के लिए गुरू साहिबान द्वारा दिया गया वरदान है। इंग्लैंड व कनाडा सरकार द्वारा कुछ वर्ष पूर्व दस्तार पर लगाई गई पाबंदी को समाप्त करवाने के लिए सिखों ने संघर्ष करके शानदार जीत प्राप्त की थी। उन्होंने कहा कि फ्रांस सरकार द्वारा धार्मिक चिन्ह पहनने के बारे में बनाए गए कानून की औपचारिकता पूरी करने के लिए सिखों की दस्तार पर लगाई गई पाबंदी मंदभागी है। यह सतिगुरू द्वारा बख्शीश सिखी स्वरूप को दूसरे धर्मों के साथ मिलाने की एक साजिश है। उन्होंने कहा कि फ्रांस सरकार द्वारा बनाए गए इस कानून को खत्म करने व दस्तार पर लगाई गई पाबंदी को हटाने के लिए भारत सरकार फ्रांस सरकार के साथ कूटनीतिक संबंधों का बहाना बना रही है। अब तक कोई भी सार्थक परिणाम सामने नहीं आए हैं। भारत सरकार सिखों के हितों की रक्षा व मानवाधिकारों की स्थापना के लिए गंभीर नहीं है।

Final

गुरबाणी का शुद्ध उच्चारण न होने से अर्थ का अनर्थ

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा है कि गुरबाणी के शुद्ध उच्चारण न होने से अर्थ के अनर्थ हो रहे हैं। गुरबाणी के सही अर्थ व शुद्ध उच्चारण गुरमति के प्रकाश में सहायक होते हैं। एसजीपीसी की धर्म प्रचार कमेटी की इच्छा है कि गुरमति सिखलाई कैंपों के माध्यम से प्रचारकों को गुरबाणी के शुद्ध उच्चारण के बारे में जानकारी दी जा सके। बाबा संग ढेसियां में आयोजित ग्रंथी/पाठी व प्रचारकों के चार दिवसीय गुरमति सिखलाई कैंप में ६०० से अधिक ग्रंथी, पाठी व प्रचारकों ने भाग लिया।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने पंजाब सरकार के उस फैसले की प्रशंसा की जिसमें श्री गुरू ग्रंथ साहिब के प्रकाशन के अधिकार केवल सिख पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास ही होंगे। श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी जोगिंदर सिंघ ने कहा कि वे ग्रंथी-पाठी सिंघ जिन्होंने गुरबाणी संबंधी किसी से शिक्षा हासिल नहीं की, उनकी व्याकरण की गलतियों के कारण गुरबाणी शब्दों के सही अर्थ होने की बजाय गलत व्याख्या हो रही है। उन्होंने बहुत सारी गुरबाणी की तुकें बोल कर शुद्ध उच्चारण के लिए कैंप में हाजिर शिक्षार्थियों को जानकारी प्रदान की।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ही प्रकाशित करेगी श्री गुरू ग्रंथ साहिब

श्री गुरू ग्रंथ साहिब की प्रिंटिंग को लेकर चल रहे विवाद को खत्म करने के उद्देश्य से सरकार ने इस संबंधी कानून बनाने की कवायद शुरू कर दी है। इसके तहत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को ही श्री गुरू ग्रंथ साहिब को छापने का अधिकार होगा। मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल ने अपने प्रमुख सचिव डी. एस. गुरू को कहा है कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब की प्रिंटिंग के एकमात्र अधिकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को देने संबंधी आर्डिनेंस जारी कर दिया जाए।

वर्णनीय है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने पंजाब सरकार को पत्र लिखकर मांग की थी कि श्री गुरू ग्रंथ साहिब की प्रिंटिंग के अधिकार सिर्फ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास ही हों।

■

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसैट प्रैस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।